राष्ट्रीय छात्रशक्ति

शिक्षा क्षेत्र की प्रतिनिधि पत्रिका

वर्ष : 29 अंक : 5 सिंतबर–अक्तूबर, 2006

'गद्दार अफजल को फाँसी दो'
विद्यार्थी परिषद् का देशव्यापी आन्दोलन

छात्र संघ चुनावों पर सर्वोच्च न्यायालय का ऐतिहासिक निर्णय

जयपुर में कन्या भ्रूण हत्या के विरोध में परिषद् द्वारा आयोजित रैली में उमड़ा छात्राओं का भारी समूह

'मजहबी आधार पर आरक्षण– देश विभाजन की पुनः तैयारी' विषय पर आयोजित विचार गोष्ठी में बोलते हुये परिषद् के राष्ट्रीय सह संगठन मंत्री श्री अतुल कोठरी जी

थिंक इंडिया वर्कशाप में विचार व्यक्त करते हुये एक प्रतिनिधि

थिंक इंडिया वर्कशाप में उपस्थित माननीय दत्तात्रय होसबोले (अखिल भारतीय सह बौद्धिक प्रमुख, राष्ट्रीय स्वंय सेवक संघ) तथा अन्य प्रतिनिधि

राष्ट्रीय
छात्रशक्ति
शिक्षा क्षेत्र की प्रतिनिधि पत्रिका
वर्ष : 29 अंक : 5, ● सितंबर–अक्तूबर, 2006

संरक्षक
अतुल कोठारी
संपादक
डा. मुकेश अग्रवाल
प्रबंध संपादक
नितिन शर्मा
संपादक मंडल
संजीव कुमार सिन्हा
आशीष कुमार 'अंशु'
उमाशंकर मिश्र

डा. रंजीत ठाकुर द्वारा अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद, बी–50, क्रिश्चियन कॉलोनी, पटेल चेस्ट, दिल्ली–110007 के लिए प्रकाशित एवं पुष्पक प्रेस, 119, डीएसआईडीसी कॉम्प्लेक्स, ओखला, फेज–1, नई दिल्ली–20 द्वारा मुद्रित

फोन : 011 – 27666019, 27662477
E-mail : chhatrashakti@yahoo.co.in
Website : www.abvp.org

मूल्य : एक प्रति रुपए 10/–

छात्रशक्ति

"राष्ट्रीय छात्रशक्ति" की ओर से सभी पाठकों एवं देशवासियों को दीपावली की हार्दिक शुभकामनाएँ।

विषय सूची

छात्र संघ चुनाव
देशभर में लहराया परिषद् का परचम..... 6
Supreme Court Decision on students union polls.....8
प्रोफैसर सब्बरवाल की मौत का मामला
वास्तविकताएं व घटनाक्रम.....9
विशेष लेख.....11
राष्ट्रीय परिदृश्य
अफजल की फाँसी के समर्थन में देशव्यापी आंदोलन.....13
जयंती
प्रखर राष्ट्रवाद के प्रतीक शहीद भगत सिंह.....14
परिचर्चा
शिक्षा का स्वरूप क्या हो.....16
साक्षात्कार
विद्यार्थी परिषद् के उत्तर क्षेत्र संगठन मंत्री श्री रमेश पप्पा....20
सघंर्ष की राह पर.....21
परिषद गतिविधियां.....25
शैक्षिक परिदृश्य.....27
साथ में– कविता / स्मरणांजलि / कॅरिअर / Martyrdom of Karyakartas

आह्वान

- *क्या आप देश की वर्तमान दशा पर चिन्तित हैं?*
- *क्या आपको दृढ़ विश्वास है कि सामाजिक परिवर्तन लाने में छात्र-युवा ही सक्षम हैं?*

यदि हां

- *तो अपने क्षोभ को शब्द दीजिए और विश्वास कीजिए, आपमें क्षमता है कलम की नोंक से दुनिया का रुख बदलने की।*
- *अपने विचारों को साहित्य की किसी भी विधा में शब्द दें तथा राष्ट्रीय छात्रशक्ति द्वारा अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद, बी-५०, क्रिश्चियन कॉलोनी, पटेल चेस्ट, दिल्ली-११०००७ को प्रेषित करें।*

कविता

"हमारी धरती है"

रामअवध शर्मा माधव

जहां तोप बन्दूकें गरजती हैं
उस सीमा के पार हमारी धरती है

काश्मीर का कण–कण अपना
शत्रु चाहता उसे हड़पना
देश बांट कर देश बनाया
अब भी वही देखता सपना
देश विभाजन की पीड़ा की
आग हृदय में जलती है
सीमा के उस पार हमारी धरती है

हमने बढ कर हाथ मिलाया
उसने पीछे चांद चुभाया
आतंकी जेहाद छेड़ कर
निर्दोषों का रक्त बहाया
ऐसे निष्ठुर पड़ोसी से
वेदना असीम उभरती है
सीमा के उस पार हमारी धरती है

दृढ़ संकल्प हमारा गिरि सा
शौर्य धीरता थाती है
प्रलयंकर तूफान वेग से
टकराने की छाती है
राष्ट्रप्रेम की अविरल धारा
रगों–रगों में बहती है
सीमा के उस पार हमारी धरती है

बारूदों की गंध हमें भी भाती है
बलिदानी वीरों की यादें आती हैं
यहां तीसरा नेत्र भी खुल जाता है
होते भस्म नहीं कोई बच पाता है
कोटि कंठ से आती रण ललकार यहां
प्रलयंकर शंकर की भेरी बजती है
सीमा के उस पार हमारी धरती है

■

स्मरणांजलि

स्व० यशवंतराव केलकरजी ने अपना पूरा जीवन समाज परिवर्तन के महती कार्य में खपा दिया। अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद के शिल्पकार एवं राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सजग स्वयंसेवक के रूप में वे निरंतर एक मजबूत संगठन बनाने एवं लोकसंग्रह के कार्य में जुटे रहे। उनके स्नेहिल सान्निध्य से अनेक कार्यकर्ताओं का जीवन मिशन के रूप में परिणत हुआ। उनके जीवन का हर क्षण कार्यकर्ताओं को प्रेरणा देता था। विद्यार्थी परिषद् के राष्ट्रीय अध्यक्ष रहे श्री केलकर जी की पुण्य स्मृति में कार्यकर्ताओं ने अपने अनुभवों को "पूर्णांक की ओर" नामक पुस्तक में शब्दांकित किया है। प्रस्तुत है इस पुस्तक से उद्धृत प्रेरणास्पद अनुभव :–

स्व० यशवंतराव केलकर

सोलापुर शहर में यशवन्तरावजी का षष्टीपूर्ति समारोह मनाया जा रहा था। कार्यक्रम के बाद सर (यशवन्तराव) को मुंबई जाना था। उन्हें विदा करने हम सभी कार्यकर्ता रेलवे स्टेशन पहुँचे। रेलवे स्टेशन की सीढ़ियाँ चढ़कर जैसे ही हम स्थानक पर पहुँचे, वैसे ही यशवन्तरावजी ने उनकी बैग मेरे हाथ में थमा दी और जल्दी से वे टिकट घर की ओर चल पड़े। मैं जरा हड़बड़ाया, क्योंकि उनका आरक्षण हो गया था और वह टिकट मेरे पास ही था। दूसरे ही क्षण अपने को सम्हाल कर मैं सर के पीछे दौड़ पड़ा और उन्हें कहा, 'सर, आप का आरक्षण हो गया है और टिकट मेरे पास है।' उन्होंने मेरी ओर न देखते हुये ही कहा, 'प्रदीप, मेरा मुंबई तक का आरक्षण हो गया है, यह मेरे ध्यान में है, लेकिन तुम लोग मुझे विदा करने आए हो, तब तुम सब कार्यकर्ताओं का प्लेटफार्म टिकट लेने मैं जा रहा हूँ।

सामाजिक जीवन में नीति का पालन यह राष्ट्रीय चारित्र्य का दूसरा नाम है। यह वस्तुपाठ उनकी छोटी सी कृति ने प्रकट कर दिया था।

बढ़ती राष्ट्रविरोधी गतिविधियां-खतरे की घंटी

'एक्टिविस्ट' होना बड़ी बात है, लेकिन आज यह शब्द चंद सिरफिरे लोगों के कारण अपना अर्थ खोता जा रहा है। यह चौंकाने वाली बात है कि देश की एकता और अखण्डता को 'ऐमीनेण्ट एक्टिविस्टों' से ही खतरा उत्पन्न हो गया है। देश में स्थापित एवं प्रारंभ होने वाली विकास की योजनाओं के खिलाफ ये अक्सर 'प्रोटेस्ट' करते पाए जाते है। 'समाजसेवा' की आड़ में विदेशी चंदे पर पलने वाले इन 'पाँच सितारा' एक्टिविस्टों की गतिविधियाँ हमेशा संदिग्ध रही है। ये हमेशा इस फिराक में रहते हैं कि भारत को किस प्रकार बदनाम किया जाए? वे चाहते है कि यहाँ अराष्ट्रीय प्रवृत्तियों को उभार मिल सके। देश की छवि दलित–महिला–अल्पसंख्यक विरोधी निर्मित हो सके। सेना के खिलाफ और आतंकवादियों के पक्ष में माहौल बन सके। 'देशभक्ति' शब्द सुनकर ये कांपने लगते है और सबसे दुर्भाग्यपूर्ण बात है कि कांग्रेस–वामपंथी दल इनके मंसूबों में सहायक हो रहे है। इन दिनों इन 'एक्टिविस्टों' की कारस्तानियों से देश में अराजकता का माहौल कायम हो रहा है।

सनद रहे कि 13 दिसम्बर 2001 को संसद पर आतंकवादी हमला हुआ था। हमले के प्रमुख साजिशकर्ता आतंकवादी मोहम्मद अफजल को अक्टूबर 2003 में दिल्ली उच्च न्यायालय ने फांसी की सजा सुनाई थी, जिसे सर्वोच्च न्यायालय ने 4 अगस्त 2005 को बरकरार रखा और गत 26 सितंबर 2006 को सर्वोच्च न्यायालय ने अफजल को फांसी के लिए 20 अक्टूबर 2006 की तिथि तय की। सर्वोच्च न्यायालय द्वारा अफजल को फाँसी की सजा तय होते ही हर बार की तरह तथाकथित सेकुलर बुद्धिजीवी और मानवाधिकार कार्यकर्ता चिल्ल–पों करने लगे और अब वे आतंकवादी अफजल के पक्ष में पैरवी करते सामने आ रहे है। इस पूरे मामले में संप्रग सरकार की चुप्पी बेहद खतरनाक है। कांग्रेस का दुलमुल रवैया है। कांग्रेस शासित जम्मू–कश्मीर के मुख्यमंत्री गुलाम नबी आजाद ने खुले स्वर में अफजल को फाँसी से बचाने की मांग की। इसी तरह माकपा के विधायक मो. युसूफ तारागामी और नेशनल कांफ्रेस के नेता फारूक अब्दुल्ला ने भी फांसी की सजा नहीं देने की मांग की है। आखिर इन नेताओं ने एक राष्ट्रद्रोही के पक्ष में बोलने का दुःसाहस कैसे किया? निश्चित रूप से ये लोग अफजल के पक्ष में बोलकर शहीदों का अपमान कर रहे हैं। इन्होंने तनिक भी सोचा कि संसद पर आतंकवादी हमले को विफल करने के लिए हमारे 11 सुरक्षाकर्मियों ने अपनी जान की बाजी लगा दी। आतंकवाद हमारे देश के लिए सबसे बड़ी चुनौती है। इसके चलते गत दो दशकों में 65,000 निर्दोष भारतीयों की जानें गयी हैं। हम कब तक चुप रहेंगे? आज जरूरत इस बात की है कि छात्र–नौजवान एकजुट होकर राष्ट्रद्रोहियों को मुंहतोड़ जवाब देने के लिए आगे आएं।

● वंदेमातरम् आजादी का तराना है। वंदेमातरम् अंग्रेजी साम्राज्यवाद को ध्वस्त करने का सबसे मजबूत हथियार था। वंदेमातरम् का उद्घोष कर प्रसिद्ध क्रांतिकारी अशफाक उल्ला, रोशन और रामप्रसाद बिस्मिल जैसे असंख्य क्रांतिकारियों ने फांसी के फंदे को चूमा था। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के आद्य सरसंघचालक डॉ. केशवराव बलिराम हेडगेवार ने प्रखर देशभक्ति का परिचय देते हुए नील सिटी स्कूल में वंदेमातरम् का उद्घोष किया। दण्ड में उन्हें स्कूल से निकाल दिया गया। वंदेमातरम् लेख के लिए वीर सावरकर को कालापानी की सजा हुई। महात्मा गांधी की हर प्रार्थना सभा वंदेमातरम् से शुरू होती थी।

देश की आजादी के बाद वंदेमातरम् हमारा राष्ट्रगीत बना। वंदेमातरम् राष्ट्रीय स्वाभिमान का प्रतीक है। यह राष्ट्रीय संकल्प का उद्घोष है। राष्ट्रगीत वन्दमातरम् से जन–जन को असीम ऊर्जा प्राप्त होती है। यह संसार का दूसरा सर्वाधिक लोकप्रिय गीत है। वंदेमातरम् आज भी हमें दृढ़ संकल्प के साथ जूझने को बल देता है।

इन दिनों वंदेमातरम् पर फिर संकीर्ण राजनीति हो रही है। विदित हो कि केन्द्रीय मानव संसाधन विकास मंत्री अर्जुन सिंह ने वंदेमातरम् राष्ट्रगीत शताब्दी वर्ष के अवसर पर राज्य सरकारों से आगामी 7 सितम्बर को स्कूलों में वंदेमातरम् गीत गाये जाने का निर्देश दिया। इस निर्देश का मुस्लिम लीगी मानसिकता के लोग एवं तथाकथित सेकुलर बुद्धिजीवियों ने विरोध करना शुरू कर दिया। इसे देखते हुए केन्द्र सरकार ने कहा, राष्ट्रगीत वंदेमातरम् गाने के लिए किसी प्रकार की अनिवार्यता नहीं है। बीते 7 सितम्बर को पूरा देश वंदेमातरम् से गूंज उठा। हजारों लोगों ने उल्लासपूर्वक गाया। लेकिन प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह, जो वंदेमातरम् शताब्दी समारोह समिति के अध्यक्ष भी हैं और कांग्रेस अध्यक्षा सोनिया गांधी किसी कार्यक्रम में उपस्थित नहीं हुए। अल्पसंख्यकों को महज वोट–बैंक के रूप में देखने वाली राजनीतिक दलों से देश की राष्ट्रीय एकता को नुकसान हो रहा है। धिक्कार है उस मानसिकता को, जो यहां की माटी में पले, बढ़े लेकिन जिन्हें राष्ट्रवाद के हर प्रतीक से परहेज हैं।

छात्र संघ चुनाव

देश भर में लहराया परिषद् का परचम

—आशीष कुमार अंशु

दिल्ली

दिल्ली विश्वविद्यालय छात्र संघ चुनाव में उपाध्यक्ष पद पर अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद् के उम्मीदवार विकास दहिया की जीत एक बड़ी जीत थी। वजह, हर बार की तरह इस बार भी डुसू चुनाव में विद्यार्थी परिषद् की सीधी लड़ाई एन.एस.यू. आई. से नहीं बल्कि केन्द्र और राज्य की कांग्रेस सरकार के साथ थी। आसन्न नगर निगम के चुनाव की वजह से इस वर्ष डुसू चुनाव जीतना कांग्रेस के लिए अधिक आवश्यक हो गया था। इसलिए कांग्रेसी नेताओं की शह पाकर एन.एस.यू.आई. के छात्र नेताओं ने जमकर आचार संहिता का उल्लघंन किया। एन.एस. यू.आई. का एक डूसु प्रत्याशी खुलेआम शराब के नशे में धुत होकर छात्रों के बीच शराब बाटंता हुआ एक मीडिया चैनल में दिखा। परन्तु बाद में खबर कहाँ गुम हो गई पता ही नहीं चला और जब मीडिया बोली तो उसका दोहरा चरित्र उजागर हुआ। 8 सितंबर में डूसु का चुनाव सम्पन्न हुआ, उसके अगले दिन सुबह लगभग हर चैनल पर डूसु चुनाव परिणम का एक ही कैप्शन आ रहा था। डूसु चूनाव में ए.बी.वी.पी. चारों सीटों पर पराजित। सिर्फ औपचारिक घोषणा का इन्तजार। किसी ने नतीजे आने तक इन्तजार करने की जरूरत महसूस नहीं की। ए.बी.वी.पी. के प्रत्याशी विकास दहिया ने एन.एस.यू.आई. के अभिमन्यू सिंह को हराकर उपाध्यक्ष पद पर शानदार जीत दर्ज की। डूसु उपाध्यक्ष विकास दहिया ने छात्र शक्ति को बताया की इस बार डूसु चुनाव में कांग्रेस ने अपनी सारी ताकत झोंक दी थी। पूरी सरकारी मशनरी ए.बी.वी.पी. के खिलाफ काम कर रही थी। उसके बावजूद एक महत्वपूर्ण पद हम उनसे छीन कर लाये हैं। दहिया ने विश्वास दिलाया कि अगले वर्ष चारों के चारों पदों पर विद्यार्थी परिषद् का कब्जा होगा। इस वर्ष विद्यार्थी परिषद् के अध्यक्ष पद के लिए गार्गी लगनपाल, सचिव पद के लिए जीतेन्द्र और सयुंक्त सचिव पद के लिए सुरेन्द्र सिंह उम्मीदवार थे। विद्यार्थी परिषद् के लिए यह खुशी की बात है कि विश्वविद्यालय से सम्बधित 22 कालेजों में उसके कार्यकत्ताओं ने विजय हासिल की। किरोड़ीमल, विवेकानन्द, अदिति, रामलाल आनन्द, मोतीलाल नेहरू सहित दिल्ली के सभी प्रमुख कालेजों में मिली सफलता छात्रों के बीच परिषद् के जमीनी जुड़ाव को ही दर्शाती है।

उत्तराचंल

अ.भा.वि.प. ने पूरे प्रदेश में छात्र संघ चुनावों में जोरदार सफलता प्राप्त की है। उत्तरांचल के गढ़वाल क्षेत्र में कर्णप्रयाग, गैरसैण, पोखरी, श्रीनगर, टिहरी, बड़कोट, कोट द्वार, ऋषिकेश, लक्सर में परिषद् के प्रत्याशियों ने अध्यक्ष पद सहित अन्यों पद पर शानदार सफलता प्राप्त की है। कुमाऊँ क्षेत्र में भी बेरीनाग, रानीखेत, काशीपुर में परिषद् के प्रत्याशियों ने अध्यक्ष, उपाध्यक्ष सहित अन्यों पदों पर जीत दर्ज कर विराधी छात्र संगठनों का सूपड़ा साफ कर दिया है। परिषद् के प्रदेश मंत्री भास्कर ने इस अवसर पर कहा कि उत्तराचंल में विद्यार्थी परिषद् की शानदार जीत परिषद् के कार्यकत्ताओं की जो तोड़ मेहनत का परिणाम है। उन्होंने प्रदेश की कांग्रेस सरकार पर निशाना साधते हुये कहा कि इस सरकार की छात्र विरोधी नीतियों के विरूद्व संघर्ष जारी रहेगा।

वाराणसी

काशी विद्यापीठ में हुये चुनावों में परिषद् ने ऐतहासिक जीत दर्ज की है। परिषद् के प्रत्याशी सत्येन्द्र सिंह ने समाजवादी छात्र सभा के रोहन सिंह सोनू को 97 मतों से पराजित कर अध्यक्ष पद पर जीत प्राप्त की। इस अवसर पर सत्येन्द्र सिंह ने कहा कि समाजवादी पार्टी द्वारा धनबल, बाहुबल और सत्ता के दुरउपयोग के बावजूद परिषद् की जीत ने सिद्व कर दिया है कि छात्र हितों के लिये संघर्ष करने वाले छात्र नेता ही छात्र समुदाय को स्वीकार हैं। उन्होंने भरोसा दिलाया कि आने वाले दिनों में छात्र संघ के माध्यम से छात्र हितों के लिये संघर्ष जारी रहेगा तथा सरकार को विवश किया जायेगा कि वह अपनी छात्र विरोधी नीतियां बदले। उल्लेखनीय है कि इन चुनावों में सरकारी तंत्र का जमकर दुरूपयोग किया गया तथा सरकार में शामिल मंत्री व सत्ताधारी पार्टी के नेता खुलेआम चुनावों में दखलअंदाजी करते रहे।

आंध्रप्रदेश

आंध्रप्रदेश की हैदराबाद सैंट्रल युनीवर्सिटी में परिषद् ने वामपंथियों के गढ़ में सेंध लगाते हुये छात्र संघ चुनावों में शानदार सफलता प्राप्त की है। परिषद् के जी. वैकेंटनारायण ने यू.डी.एफ. के पी. रमेश बाबू को 58 मतों के अन्तर से पराजित कर अध्यक्ष पद जीता। उपाध्यक्ष पद पर भी परिषद् के नारायण सिंह ने यू.डी.एफ. के उदित को 250 मतों से हराया। परिषद् की इस शानदार जीत से उतसाहित लगभग 1000 कार्यकर्त्ताओं ने विश्वविद्यालय में विजय जलूस निकाला। इस अवसर पर परिषद् के नवनिर्वाचित अध्यक्ष ने छात्रों को संबोधित करते हुये कहा कि वामपंथियों की राष्ट्रविरोधी नीतियों और हिंसात्मक गतिविधियों का विश्वविद्यालय के छात्रों ने मुँहतोड़ जवाब दिया है। उन्होंने कहा कि परिषद् अपने रचनात्मक दृष्टिकोण से विश्वविद्यालय में शैक्षिक वातारण को ठीक करेगी तथा इसके साथ ही छात्रों में राष्ट्रभक्ति की भावना जगाने के लिये भी विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन किया जायेगा।

आसाम

आसाम में हुये छात्र संघ चुनावों में विद्यार्थी परिषद् ने कई स्थानों पर सफलता प्राप्त की है। सिपाजार, बरपेटा, गुवाहाटी महाविद्यालयों में परिषद् के प्रत्याशियों ने शानदार जीत दर्ज की है। परिषद् के क्षेत्रीय संगठनमंत्री श्याम मोगा ने बताया कि पिछले एक साल से प्रदेश में चल रहे बंगलादेशी धुसपैठ विरोधी आंदोलन के कारण पूरे प्रांत में परिषद् का जनाधार बढ़ा है। परिषद् की बढ़ती हुई लोकप्रियता के कारण ही प्रांत में हुये छात्र संघ चुनावों में परिषद् एक प्रभावी संगठन के नाते उभर कर सामने आई है। उन्होनें परिषद् के कार्यकर्त्ताओं का आह्वान करते कहा कि वह आने वाले समय में आसाम को बचाने के लिये पूरे आसाम के छात्र समुदाय को एकजुट करें।

हिमाचल

हिमाचल में कांग्रेस की सरकार द्वारा धन बल, बाहुबल व सत्ता के दुरूपयोग के बावजूद भी परिषद् ने हमेशा की तरह छात्र संघ चुनावों में अपना परचम लहराया है। कुल 235 सीटों पर हुये चुनाव में 83 सीटों पर परिषद् ने जीत दर्ज की है। 20 कालेजों में अध्यक्ष पद पर परिषद् के कार्यकत्ताओं ने सफलता पाई है। परिषद् के प्रदेश मंत्री उमेश दत्त ने बताया कि प्रांत के सभी प्रमुख कालेजों जिसमें मंड़ी, धर्मशाला, उना के महाविद्यालय शामिल है, में परिषद् ने अपना दबदबा कायम रखा है। उन्होंने प्रदेश सरकार पर छात्र संघ चुनावों के राजनीतिकरण का आरोप लगाते हुये कहा कि जिस पैमाने पर सरकार में शामिल मंत्रियों व विधायको ने चुनावों में सक्रिय भूमिका निभाई, वह निश्चित ही निंदनीय है। उन्होंने कहा कि परिषद् छात्र संघों के माध्यम से कांग्रेस सरकार की छात्र विरोधी नीतियों के खिलाफ संघर्ष जारी रखेगी।

मध्यप्रदेश

राज्य में सम्पन्न छात्र संघ चुनाव में अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद् को ऐतिहासिक सफलता मिली है प्रदेश के समस्त महाविद्यालयों में राष्ट्रवादी छात्र संगठन ने अपना भगवा परचम फहराया है। यह परिषद् कार्यकत्ताओं की परिसर में साल भर सक्रियता, देश एवं छात्र हितों के लिए लगातार संघर्ष तथा शिक्षा के व्यवसायीकरण, शिक्षा की बिगड़ती गुणवत्ता, रोजगार, विश्व विद्यालयों की बदत्तर स्थिति के खिलाफ चलाये जा रहे आन्दोलन का परिणाम है। यह जीत सिद्ध करती है कि प्रदेश का आम छात्र आज राष्ट्रवादी शक्तियों के साथ है तथा इन चुनावों से एक सक्षम नेतृत्व बनकर समाज में उभरकर आया है।

प्रदेश में कुल 384 महाविद्यालयों में चुनाव हुये जिसमें अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद् 284 अध्यक्ष, 293 उपाध्यक्ष, 292 सचिव तथा 294 सहसचिव निर्वाचित हुये हैं। जिसमें महाकौशल प्रांत में कुल 147 महाविद्यालयों में चुनाव हुये जिसमें 120 अध्यक्ष, 128 उपाध्यक्ष, 130 सचिव, 132 सह सहसचिव निर्वाचित हुये है।

जबलपुर महानगर में अ.भा.वि.प. ने ऐतिहासिक जीत दर्ज कर छात्र राजनीति में इतिहास बनाया। जिसमें कुल 26 महाविद्यालयों में चुनाव हुये। जिसमें 21 अध्यक्ष, 21 उपाध्यक्ष, 21 सचिव, 23 सहसचिव चुनाव जीते। जिसमें 21 कालजों में पूरा पैनल जीता। उल्लेखनीय है कि शहर में ऐसा कोई कालेज नहीं है जहाँ : हमारी उपस्थिति नहीं है। छात्र चुनाव शंतिपूर्ण सम्पन्न हुये है इससे सिद्व होता है कि छात्रों ने अपने अनुशासन का परिचय दिया है। इससे यह भी पता चलता है कि वह अपने अधिकारों के प्रति सजग है तथा वह अपने लोकतांत्रिक अधिकारों के लिए संघर्ष के लिए तैयार है तथा प्रत्यक्ष विधि से चुनाव चाहता है।

Supreme Court accepts Lyngdoh panel recommendations for students' union polls

Against the back drop of money power in student union elections, the Supreme Court on Friday accepted the Lyngdoh Committee's recommendations to reform the polls by implementing a slew of measures including a ban on flow of funds from political parties and a cap of Rs 5,000 on expenditure by candidates.

Accepting the recommendations of the six-member court appointed committee led by former Chief Election Commissioner J M Lyngdoh, the apex court directed that the maximum age for a candidate contesting student polls should be 25 years. Restricting the age limit of the contestants to 25 years was impelled by the Committee's report which highlighted the case of a 54-year-old man contesting one of the elections in the Allahabad University for whom his 22-year-old son campaigned However, in the case of research scholars the age limit has been fixed at 28.To check the increasing role of money power in these elections, the court directed a ceiling of Rs 5,000 as maximum permitted expenditure. With a view to preventing the inflow of funds from political parties into the election, the court barred the candidates from receiving any political donations except voluntary contibutions made by the student body.

Within two weeks of the declaration of the result, each candidate shall submit audited accounts to the college/university authorities. The Lyngdoh committee in its report said that a large number of academic institues in India had become feeder devices for political candidates and party workers as well as mechanism for political parties to by-pass conduct norms prescribed by the Election Commission. To get rid of political connection of students elections, the committee recommended the disassociation of students elections and students representation from political parties. Those who aspire to contest election will now have to pay more attention on their classroom studies as the candidates will have to attain minimum percentage of attendance prescribed by the university or 75 per cent besides candidates should not carry any academic backlog in the year of contesting the election. The candidate must be a regular/ full time student of the college/university and they should not have a previous criminal record. The candidate will also have only one opportunity to contest for the post of office bearer.

ABVP Welcomes Supreme Court's decision on College Union Elections

ABVP Welcomes the Supreme Court's decision to conduct College Union elections.

Stating the decision as the need of the hour, ABVP National General Secretary Shri K N Reghunandan demanded to conduct student union elections in those states where it's not going on now and also to implement code of conduct in places where now elections are going on regularly.ABVP had always demanded ideal code of conduct in college union elections.

There must not be any interference of political parties in student union elections. But ABVP strongly feels demands the role of student organisations should be recognised at college and university level. Student organizations have to play their role beyond partisan politics. A perfect system has to be made to take decision on the controversies regarding the process of student union elections. Otherwise problems will arise always because of the biased decisions of authorities.

ABVP welcomes the clauses in code of conduct like maximum age of 25 years for a candidate contesting student polls,75% attendance etc. Vidyarthi Parishad also welcomed the directions regarding publicity. ABVP feels that, direct election method is the best way to conduct election in colleges and we can adopt indirect method in Universities because its vast geographical area.

The decision to conduct student union elections is the victory of democracy. ABVP appeals the whole student community to take part in student union elections and to participate in its activities to prove the role of student unions in the development of nation.

उज्जैन :- प्रो. सबरवाल की मौत का मामला।

-वास्तविकताएं व घटनाक्रम-

• उज्जैन का माधव महाविद्यालय एक सरकारी संस्थान है। चुनावों में हमेशा गुंडागर्दी को आधार बनाकर एनएसयूआई जीत हासिल करती रही है। ऐसे में कांग्रेस व एनएसयूआई के गुंडातत्वों को महाविद्यालय प्रशासन द्वारा हमेशा शरण दी गई। (मध्यप्रदेश में पिछले दशक में कांग्रेस का शासन रहा है।)

• मध्यप्रदेश में छात्रसंघ चुनाव महाविद्यालय स्तर पर परोक्ष पद्धति से होता है। कुछ गुणवत्ता प्राप्त छात्र एवं चयनित कक्षा प्रतिनिधि तथा कुछ विभिन्न गठित समितियों के प्रतिनिधियों को मिलाकर छात्रसंघ गठित होता है। दूसरे दौर में यह सारे प्रतिनिधि मिलकर छात्रसंघ पदाधिकारियों का चुनाव करते हैं।

• इस वर्ष 25–26 अगस्त को छात्रसंघ चुनाव पूरे प्रदेश में हुआ। इस वर्ष अभाविप के साथ कुल 28 में से 16 प्रतिनिधि थे तथा उनकी जीत तय थी। दिनांक 24 अगस्त को महाविद्यालय में 8 कक्षा प्रतिनिधि निर्विरोध निर्वाचित हुए जो अभाविप समर्थित थे। इसलिए एनएसयूआई पदाधिकारी चुनाव चयन का दूसरा दौर रद्द कराना चाहते थे। उन्होंने ऐसा खुलकर ऐलान भी किया था।

• इसी हार को देखकर एनएसयूआई व कांग्रेस नेता बौखला गए व उन्होंने चुनाव निरस्त करने हेतु आकर खूब गाली–गलौज एवं तोड़फोड़ की, प्राचार्य कक्ष में घुसकर जमकर तोड़फोड़ की गई व पूरे महाविद्यालय में आतंक और डर का माहौल बन गया तथा प्राध्यापकों को शारीरिक रूप से प्रताड़ित भी किया। विशेषकर चुनाव समिति के बैठक कक्ष में घुसकर प्रो. नाथ पर डंडे से संजीव जैन (कांग्रेस से जुड़े) ने हमला किया (रिपोर्ट दर्ज है) तथा कुछ लोगों ने प्रो.सबरवाल से भी हाथापाई की। (ज्यों दृश्य प्रचार माध्यमों ने दिखाया है) इस संदर्भ में चुनाव प्रभारी प्रो.नाथ द्वारा थाना देवास गेट में अपराध कं.– 260/06 पंजीकृत कराया गया था।

• चुनाव रद्द कराने के लिए दहशत के उद्देश्य से एनएसयूआई के समर्थक महाविद्यालय में घुसे व जेल भरो आंदोलन से, जो महाविद्यालय से महज 100 मीटर दूरी पर चल रहा था, से निकलकर लगभग एक हजार एनएसयूआई व कांग्रेस कार्यकर्ता महाविद्यालय परिसर में घुसे। जिन्होंने पूरा उधम मचाया।

• चुनाव रद्द कराने के लिए महाविद्यालय के फैसले से नाराज सभी प्रतिभावान नॉमीनेट छात्र (मेधावी छात्र तथा कक्षा प्रवक्ता) प्रतिनिधि अभाविप के प्रदेश अध्यक्ष श्री शशिरंजन अकेला व श्री विमल तोमर के नेतृत्व में प्रशासन की अनुमति से महाविद्यालय के चुनाव प्रभारी प्रो.नाथ से मिले। इन सभी ने प्रतिनिधि मंडल के रूप में चुनाव रद्द कराने का कारण उनसे पूछा। इसी संदर्भ में प्रो.नाथ द्वारा पुलिस में दर्ज मामले में एनएसयूआई एवं कांग्रेस कार्यकर्ताओं द्वारा तोड़फोड़ व अभाविप द्वारा शासकीय कार्य में बाधा का मामला दर्ज किया।

• उपरोक्त दर्ज मामले में अभाविप के 5 कार्यकर्ता 27 अगस्त को गिरफ्तार हुए व जमानत पर रिहा हुए तथा दिनांक 30 अगस्त को अभाविप के और दो कार्यकर्ता गिरफ्तार हुए व उन्हें न्यायिक हिरासत में भेजा गया। परंतु 26 अगस्त को मामला दर्ज होने पर भी एनएसयूआई के कार्यकर्ताओं की गिरफ्तारी 29 अगस्त तक नहीं हुई।

• 30 अगस्त को कांग्रेस के 23 लोगों को न्यायिक हिरासत में लिया गया। परंतु दूसरे ही दिन उन सभी की जमानत हो गई।

• 30 अगस्त तक प्रो.सबरवाल की मृत्यु का मामला अज्ञात लोगों के ख़िलाफ ही था। परंतु प्रचार तंत्र तथा राज्यपाल के दबाव में सरकार आ गई। व सीआईडी ने अभाविप के दो कार्यकर्ता प्रो.शशिरंजन अकेला व श्री विमल तोमर के खिलाफ दफा 302 में प्रकरण दर्ज करके कार्यवाही शुरू कर दी।

• महत्वपूर्ण तथ्य यह है कि अभाविप के लोगों के महाविद्यालय में जाने से पूर्व ही एनएसयूआई के कार्यकर्ताओं ने प्राचार्य, चुनाव प्रभारी प्रो.नाथ एवं समिति के अन्य सदस्य जिसमें प्रो.सबरवाल भी थे, उनकी पिटाई कर दी थी। परंतु सारा समाचार माध्यम इसकी अनदेखी कर रहा है। जबकि संदर्भ में प्रो.नाथ द्वारा शिकायत दर्ज है।

• प्रो.हरभजन सिंह सबरवाल की दस वर्ष पूर्व हृदय की

शल्यक्रिया हुई थी तथा वे कुछ दिनों से बीमार थे। फिर भी बीमार होने पर उन्हें चुनाव समिति में रखा गया। उस दिन भी उनका स्वास्थ्य खराब था। एनएसयूआई द्वारा पिटाई के बाद उनका स्वास्थ्य और गिर गया व उन्होंने प्राचार्य से अवकाश की मांग की परंतु उन्होंने मना किया। शुद्ध हवा हेतु महाविद्यालय के कर्मचारी ने उन्हें बगीचे में बिठाया था।

- सहारा चैनल द्वारा प्रो.सबरवाल के साथ हाथापाई करते छात्रों को अभाविप के कार्यकर्ता बताया गया है। परंतु वास्तव में वे एनएसयूआई व कांग्रेस के कार्यकर्ता:-

उमेश मेंगर – शहर अध्यक्ष (एनएसयूआई)

पंकज यादव – पूर्व छात्र संघ अध्यक्ष (एनएसयूआई) माधव कॉलेज

आकिब कुरैशी

आशीष गुप्ता

आजाद यादव – नगर निगम अध्यक्ष, उज्जैन

आदि स्पष्ट रूप से दिख रहे हैं, इसलिए अभाविप के पहुंचने से पहले ही एनएसयूआई व कांग्रेस के कार्यकर्ताओं ने प्राध्यापकों की पिटाई की तथा प्रो.सबरवाल के साथ भी हाथापाई की, जिससे वे सदमे में थे।

- महाविद्यालय के कर्मचारी ने भी बयान दिया है कि उसने उन्हें स्कूटर से गिरते देखा व बाद में उन्हें अस्वस्थ पाकर सभी लोग अस्पताल ले गए। इस बयान से तो यह हत्या नहीं हादसा ही नज़र आता है।

कुछ और तथ्य:-

- सरकार द्वारा तुरंत वहां कानून व व्यवस्था के जिम्मेदार शहर पुलिस अधीक्षक (सीएसपी) तथा अन्य दो थाना प्रभारी को निलंबित किया गया।
- राज्य अपराध अन्वेषण विभाग (सीआईडी) को जांच सौंपी गई है।
- सरकार ने न्यायिक जांच भी बिठाई है।
- अभाविप ने उच्चस्तरीय जांच की मांग की है।
- कांग्रेस ने प्रो.सबरवाल के बेटे को अपनी राजनीति का हथकंडा बनाया है तथा उनकी मौत पर वह अपनी रोटियां सेंक रही है।

समाचार माध्यम:-

- कुछ समाचार माध्यमों व विशेषकर कुछ चैनलों ने इसे भी महज एक सनसनी समाचार बनाकर पेश किया है।
- ऐसे समाचारों को देखकर लगता है कि प्रो.सबरवाल की मौत के मामले को अपने चैनल की सस्ती लोकप्रियता के लिए उपयोग कर रहे हैं
- कानून व न्याय व्यवस्था की अनदेखी करते हुए खुद ही न्यायाधीश बनकर अभाविप को दोषी बताकर प्रचारित कर रहे हैं।
- कुछ समाचार पत्रों ने इस प्रकार के संपादकीय लिखकर अपनी मर्यादा का उल्लंघन किया है।

कुछ सवाल:-

- अभाविप में हर स्तर पर प्राध्यापक कार्यकर्ता छात्रों के साथ सक्रिय भूमिका में कार्यरत रहते हैं। क्या तब भी परिषद् के कार्यकर्ताओं का रवैया ऐसा हो सकता है?
- प्रो.नाथ की एक ही शिकायत पर इतने दिनों तक एनएसयूआई के लोग गिरफ्तार नहीं हुए व अभाविप के कार्यकर्ता तुरन्त गिरफ्तार हुए तथा आनन फानन में दो परिषद् कार्यकर्ताओं पर धारा 302 भी लगा दी। क्या इसमें सरकार/प्रशासन का झुकाव अभाविप की तरफ नज़र आता है?
- महाविद्यालय प्रशासन ने किन कारणों से चुनाव प्रक्रिया बीच में रद्द कर दी, क्या यह एनएसयूआई के दबाव में की गई कार्यवाही राजनीति प्रेरित नहीं थी?छात्रसंघ चुनाव में यह महाविद्यालय के प्राचार्य की राजनीति नहीं थी?
- गवाह बनने हेतु कर्मचारी पर दबाव किसने दिया?
- समाचार माध्यम प्रो.सबरवाल के साथ कथित रूप से हुई हाथापाई का दृश्य क्यों नहीं दिखा पा रहे हैं?उस मौके पर वो कहां थे?
- प्राचार्य वर्मा, प्रो.नाथ, प्रो.सबरवाल व प्रो.मित्तल पर प्राणघातक हमला करने वाले एनएसयूआई व कांग्रेस कार्यकर्ताओं पर 307 व 302 का अपराध पंजीबद्ध क्यों नहीं किया गया?

अधिकतम चैनलों ने महाविद्यालय में उत्पात मचाती भीड़ के दृश्य दिखाकर अभाविप कार्यकर्ता बताया है परंतु वास्तव में एनएसयूआई व कांग्रेस के कार्यकर्ता हैं। इस घटनाक्रम की सीडी अभाविप ने जारी की है।

प्रोफेसर सबरवाल की मौत को अभाविप दुर्भाग्यपूर्ण मानती है परंतु साथ ही उस पर चल रही ओछी राजनीति व झूठे प्रचार को भी अन्याय पूर्ण मानती है।

प्रो.सबरवाल की मृत्यु : समूचे विद्यार्थी परिषद् संगठन को घेरना समाज हित में नही

सुनील अम्बेकर (राष्ट्रीय संगठन मंत्री, अ.भा.वि.प.)

कुछ 8–9 माह पहले की बात है, भोपाल अभाविप का राष्ट्रीय अधिवेशन हो रहा था। पूरे देश भर से आए छात्र कैसे अनुशासन में रहे, पूरे भोपाल व मध्यप्रदेश ने देखा व नौजवान पीढ़ी के बारे में सभी की आशाएं पल्लवित हुईं। कई प्रकार से परिषद् को समझने का प्रयास यहां लोगों ने किया। परन्तु जब माधव महाविद्यालय की घटना का समाचार पढ़ा, देखा तो सन्न रह गया। छात्र किस दिशा में जा रहा है?यह गंभीर सोच प्रारम्भ गई। क्या छात्रों ने प्रोफेसर सबरवाल को पीटा?क्या वह परिषद् के कार्यकर्ता थे?परिषद् के कार्यकर्ता इतने गुस्से में चुनाव अधिकारी प्रोफेसर नाथ से क्यों बात कर रहे थे? क्या प्राचार्य एवं अन्य प्राध्यापकों ने एनएसयूआई के साथ मिलकर कोई छल किया था?कई प्रश्न मन में उभरे। सारी घटना में दोष किसका है? केवल एक घटना, जिसका कांग्रेस द्वारा राजनीतिकरण कर दिया गया और जिसमें सच उभर कर सामने आना बाकी है उसके आधार पर समूचे विद्यार्थी परिषद् संगठन को दोषी कैसे करार दिया जा सकता है!

माधव महाविद्यालय उज्जैन का सच क्या है वह तो समय के साथ उभरेगा, परन्तु परिषद् द्वारा कानून का पूरा सहयोग किया जा रहा है। परिषद् के कार्यकर्ता गिरफ्तार है तथा वे शान्तिपूर्ण तरीके से न्यायिक लड़ाई लड़ रहे हैं। इस समय पूरे समाज के लिए समीक्षा का विषय है कि हमारी युवा पीढ़ी/छात्र कहां जा रही है? तथा कौन सी शक्तियां उन्हें सही मार्ग दिखाने हेतु प्रयासरत हैं। दूर तक नज़र दौड़ाने पर एक ही संगठन अभाविप इसमें कई वर्षों से कार्यरत नज़र आता है। वामपंथी सारे संगठन तो समाज में विभेद को फैलाकर युवाओं को हिंसा के रास्ते पर धकेल रहे हैं। जिसका प्रत्यक्ष उदाहरण नक्सलवाद है। कांग्रेस जैसे सभी राजनैतिक दल अपने छात्र संगठनों को नेताओं के आगे–पीछे करते हुए ओछी राजनीति का पाठ पढ़ा रहे हैं। ऐसे संगठनों का वातावरण ऐसा है कि उनके बड़े–बड़े नेता भी अपने घर की लड़कियों को उनकी छात्र इकाइयों में नहीं भेज पाते।

इस परिप्रेक्ष्य में परिषद् एक अलग ही संगठन है तथा इस मौके पर जब उसे एक तरफा बदनाम किया जा रहा हो, उसे समग्र रूप में देखना भी आवश्यक है। अन्यथा यह लोकतांत्रिक प्रक्रिया में अन्याय ही सिद्ध होगा। परिषद् का प्राध्यापक/शिक्षकों के साथ संबंध ही अलग तरह का है। परिषद् मानती है कि यह शैक्षिक परिवार है इसलिए सभी के प्रयास से ही शिक्षा जगत में योग्य परिवर्तन संभव हैं। इकाई से लेकर अखिल भारतीय स्तर तक अभाविप में प्राध्यापक/शिक्षक कार्यकर्ता सक्रिय हैं। ऐसे प्राध्यापक नए–नए छात्र कार्यकर्ताओं को राष्ट्रभक्ति व सामाजिक कार्य की प्रेरणा देते हैं। श्री शशिरंजन अकेला भी ऐसे ही प्राध्यापक हैं जो गत् 15 वर्षों से उज्जैन के स्कूल में विद्यार्थी प्रिय शिक्षक हैं।

उज्जैन के आम लोगों में उन पर ऐसा गलत आरोप हजम ही नहीं हो पा रहा है। परिषद् केवल छात्र संघ की राजनीति के अखाड़े का संगठन नहीं है, वह तो सतत् अपनी अन्तः प्रेरणा से राष्ट्रीय पुनर्निर्माण में जुटा रहता है। ऐसे कई राज्य हैं जहां छात्र संघ चुनाव नहीं हैं, वहां केवल परिषद् ही सक्रिय है। अन्य कई संगठनों का तो नाम के लिए भी अस्तित्व नहीं है। आज इन तथ्यों को समझने की आवश्यकता है कि जहां चुनाव नहीं हैं, वहां भी रचनात्मक गतिविधियां परिषद् द्वारा चल रही हैं। आंध्र में चुनाव नहीं है, परन्तु पिछड़े छात्रों की समस्या के लिए परिषद् ने ज़बरदस्त आन्दोलन चलाया व सफल भी रहे। राजस्थान में भाजपा है व चुनाव भी हैं, परन्तु छात्रों की समस्याओं को परिषद् के अतिरिक्त किसी ने नहीं उठाया। परिषद् ने भाजपा शासन के सामने भी प्रखर आन्दोलन किया, लाठियां खाईं, ऐसे कई उदाहरण हैं। शिक्षा के व्यापारीकरण का अनुभव सारे समाज का रहा है व उसमें छात्र हित कैसे कुचला जाता है यह भी सभी जानते हैं। अभाविप ने इसके खिलाफ पूरे देश में आन्दोलन खड़ा कर रखा है। कुछ सफलताएं भी मिली हैं। केन्द्र में एनडीए सरकार हो या यूपीए सरकार, उसके सामने परिषद् ही खड़ी हुई है। राज्यों में भी यही स्थिति है। मध्यप्रदेश में डी–मेट के विषय में परिषद् ने सड़कों पर तथा उच्च न्यायालय में लड़ाई जारी रखी व सफलता भी पाई। वास्तव में छात्रों के हितों का हिमायती ईमानदारी से कोई संगठन है तो वह अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद् ही है। जिसने ऐसी व्यापारिक प्रवृत्ति पर रोक लगाई, अन्यथा मध्यप्रदेश के सारे सरकारी महाविद्यालयों का निजीकरण हो जाता। प्राध्यापकों को तो अभाविप का इस विषय में धन्यवाद ही करना चाहिए।

छात्र संघ चुनावों में भी अपने तथ्यों से समझौता न करते हुए गलत संस्कृति को न अपनाने के कारण ही कई बार हार का सामना करना पड़ता है। यह बात सच है कि छात्र भी परिषद् की इन बातों को देर–सवेर स्वीकार करता है। इसलिए इतने विपरीत प्रचार के बावजूद दिल्ली विश्वविद्यालय छात्र संघ (डी. यू.एस.यू.) में परिषद् उपाध्यक्ष पद पर जीती है।

परिषद् सन् 1948 से आजादी के तुरंत पश्चात् प्रारंभ हुई व सतत् रूप से कार्यरत है। छात्रों को देश का परिचय हो, देशभक्ति जागे व देश और समाज के लिए कुछ करने की ललक उनमें जागे, इसी प्रयास में परिषद् लगी है। 'देश को जानो–देश को मानो' तथा 'देश के बनो–देश को बनाओ' यह उसका कार्यक्रम हैं।

परिषद् ने छात्रशक्ति को राष्ट्रशक्ति सिद्ध किया है। सन् 1990 में कश्मीर में तिरंगा लगाने हेतु हिम्मत से जाने वाले परिषद् के कार्यकर्ता थे। तो आज भी देश को घुसपैठियों से बचाने हेतु आंदोलनरत परिषद् ही है। वंदेमातरम् का गान तो उसके लिए नित्य कार्यक्रमों की विधि है व नित्य करणीय बात है। परिषद् के कार्यक्रम में छात्र–छात्राएं आते हैं व देशभक्ति व सामाजिक कार्य का पाठ लेते हैं। इसलिए उसके समर्थक समाज के कई गणमान्य व्यक्ति जैसे श्री श्री रविशंकर जी महाराज, प्रसिद्ध वैज्ञानिक श्री कस्तूरी रंगन, अरुण शौरी, डॉ. माशेलकर आदि परिषद् के राष्ट्रीय अधिवेशनों में अपनी उपस्थिति दर्ज कराते हैं। उसके हजारों के अधिवेशन व रैलियां शांतिपूर्ण तरीके से होती हैं।

महाविद्यालयों में अच्छे वातावरण हेतु कई कुलपति व प्राचार्य परिषद् कार्यकर्ताओं पर ही भरोसा रखते हैं। यह सोचने का विषय है कि ऐसे संगठन की समाज को आवश्यकता है या नहीं। सज्जन शक्ति को बदनाम करने या उन्हें निराश करने का काम बड़ा पाप है। तथा समाज का स्वयं अपने पांव पर ही कुल्हाड़ी मारने जैसा है। प्राचार्य तथा प्राध्यापक जब राजनीति करने लगें तो छात्रों को गुस्सा आना जायज़ है। इसलिए माधव कॉलेज की घटना के संदर्भ में संपूर्ण समाज को आत्मावलोकन करना समय की मांग है। न कि राजनीति का या किसी को बदनाम करने का विषय है। कानून अपना कार्य करेगा व समाज अपना काम करे तभी तो समग्र समाधान निकलेगा। अन्यथा गुंडातत्व हमेशा सज्जन शक्ति को बदनाम करता है व उसे घेर कर समाप्त करना चाहता है। समाज भ्रमित होकर उसके झांसे में आता है, तो बाद में उसे सज्जनशक्ति के अभाव में पश्चाताप भोगना पड़ता है।

VED NANDA CENTRE FOR INTERNATIONAL LAW LAUNCHED

Former student, secretary of State Condoleeza Rice, pays glowing tribute to her teacher

It may look like a dream story. USA's powerful secretary of state, Ms. Condoleeza rice is a former student of Prof. Ved Nanda(Former National President ABVP) whose, teaching career is spread over four decades. She paid him glowing tributes on the launch of Ved Nanda Centre for International and Competitive Law in the University of Denver.

The Centre has been made possible because of a challange gift of $1 million by a former student of Nanda, Douglas Scrivner, and his wife Mary. The centre will be one of a handful of such centres in the world and will be unique in the rocky mountain region.

'You are an incredible academic, a great teacher and a great scholar and this unique combination has allowed you to impact positively the lives of so many students, including my own,' Condoleeza Rice said in a message sent on the occasion of the formal launching of the centre.

R James Nicholson, Secretary of Veterasn' Affairs, said, 'My days as a student of yours are among my fondest memories. Your teaching style ensured absorption of concepts. That have become a part of my life, enabling me to view the wider world. For that, I m eternally greatful to you.'

Over 500 people, including former students, colleagues, officials and friends, attended the event in a spontaneous show of goodwill and respect for Prof. Ved Nanda, currently Director the International Legal Studies Programme and Vice Provost for Internationalisation at the University.

'I am deeply honoured to have this special Centre carry my name,' he said at the event. 'It is my fondest hope that the work of centre will educate future attorneys and judges, diplomats and policy-makers, as well as common citizens in these critical assues in international law and policy.

An outpouring of support from alumni, including many Prof. Ved Nanda's former students, already has raised an additional $700,000 towards the goal of $2 million. 'Ved as a very inspiring teacher and it is important to continue the work he did so well,' said Theodore L. Banks, Associate General Counsel for Kraft Foods. 'If the Centre is able to tansmit the important values that we learned from Ved-- the protection of human rights, earth's resources, and the value of the individual- we'll have fulfilled a great mission for Ved and for the Law School.

ABVP launched nationwide campaign for Afzal's death sentence

Terming those pleading for mercy for Mohammed Afzal Guru, facing execution in Parliament attack case, as "traitors", Akhil Bharatiya Vidharthi Parishad (ABVP) had launched a nation-wide campaign in favour of the death sentence awarded to him. "Those seeking commutation of death sentence to Afzal are simply indulging in vote bank politics ignoring national interest and country's security," ABVP national secretary Vishnu Dutt Sharma told. Accusing the congress and UPA government at the Centre of deliberately maintaining silence on the issue, he said it raises a question mark about their intentions with regard to security of the country. ABVP would launch a campaign for social boycott of those supporting clemency for Afzal, Sharma said adding that ABVP would also appeal President A P J Abdul Kalam to ignore the mercy plea for Afzal.

Jammu & Kashmir: College students on boycotted their classes in Jammu to protest against Chief Minister Ghulam Nabi Azad and his predecessor Dr Farooq Abdullah's calls for mercy to Parliament attack plotter Mohammad Afzal Guru.Hundreds of college-goers, under the banner of Akhil Bhartiya Vidyarathi Parishad (ABVP), took out a procession from MAM College Jammu, raising slogans against Azad and Dr Abdullaha.Students of GGM Science College and SPM Rajput College of Commerce across the river Tawi also joined the protesters.They boycotted their class work and gathered at Jewal Chowk, blocking traffic on the Jammu-Srinagar National Highway (NH-1).Students raised slogans and demanded death sentence for the convict in Parliament attack, which was averted at the cost of several security personnel laying down their lives."The ABVP in the Jammu will mobilise opposition to any political move for mercy to Guru,"

PALAKKAD (Kerala): ABVP activists staged a demonstration urging President A P J Abdul Kalam not to grant clemency to Jaish-e-Mohammed terrorist Mohammed Afzal who was sentenced to death in the Parliament attack case.The march began from Government Victoria College amidst chanting of slogans against anti-national forces and ended at the Head Post Office. They also posted 250 postcards to the Rashtrapati Bhavan, urging the President not to grant clemency to Afzal.Later, inaugurating a public meeting, ABVP district organising secretary O. Sudheesh said the nation should always remember that jawans had laid down their lives for protecting Parliament.The granting of clemency would amount to belittling their sacrifice.

HUBLI (Karnataka): The Akhil Bharatiya Vidyarthi Parishad, Hubli unit, has urged President APJ Abdul Kalam not to grant clemency to the Parliament attack convict Afzal Guru.They staged a mock execution of Jammu and Kashmir Chief Minister Ghulam Nabi Azad and Afzal.Addressing the agitating activists at Vidyanagar here on Thursday, ABVP state secretary said that the United Progressive Alliance government at the Centre was adopting minority-appeasement policies.It seems to be supporting terrorist outfits to please a particular community, he said. Supporting Afzal, found guilty in the terrorist attack on Parliament, which claimed the lives of 18 security personnel, is equal to a terrorist act, he added.

Protests had also been organized in all our country including Assam, Delhi, Uttarpardesh, Punjab, Himachal, Haryana, Madhyapardesh, Maharashtra and Gujrat.

प्रखर राष्ट्रवाद के प्रतीक शहीद भगत सिंह

—सुभाष शर्मा

'मर कर भी न मिटेगी दिल से वतन की उल्फत
मेरी मिट्टी से भी खुशबू–ए–वतन आएगी'

फांसी से चार दिन पहले अपने भाई को लिखे ख़त में भगत सिंह द्वारा लिखी इन पंक्तियों से ही समझा जा सकता है कि 23 वर्ष की आयु के इस युवा की राष्ट्रभक्ति कितनी प्रखर थी। विश्व का इतिहास साक्षी रहा है कि राष्ट्रभक्ति से भरपूर ऐसे ही युवाओं ने राष्ट्रों के भाग्य बदले हैं। युवाओं की इस शक्ति से भगत सिंह भलीभांति परिचित थे। इसलिए 18 वर्ष की आयु में 'मतवाला पत्रिका' में 'युवा' शीर्षक से लिखे अपने लेख में भगत सिंह लिखते हैं– "युवक ही रणचण्डी के ललाट की रेखा हैं। युवक स्वदेश की यश दुन्दुभि का तुमुल निनाद हैं। युवक ही स्वदेश की विजय वैजयंती का सुदृढ़ दण्ड हैं। वह महाभारत के भीष्म की पहली ललकार के समान विकराल हैं, रावण के अहंकार की तरह निर्भीक हैं, प्रह्लाद के सत्याग्रह की तरह दृढ़ और अटल हैं। अगर किसी आत्मत्यागी वीर की चाह हो तो युवक से मांगो।" भगत सिंह के क्रांतिकारी, राष्ट्रसमर्पित और भारतीय संस्कृति की गाथा गाने वाले इन विचारों की नींव में भगत सिंह का पारिवारिक वातावरण था।

भगत सिंह का जन्म 28 सितंबर 1907 को लायलपुर में हुआ। इनके पिता सरदार किशन सिंह जी आर्य समाज के समर्थक थे तथा चाचा अजीत सिंह और स्वर्ण सिंह भी क्रांतिकारी थे। सरदार अजीत सिंह ही थे जिन्होंने पहली बार 'पगड़ी संभाल जट्टा' लहर में 'वन्देमातरम्' का उद्घोष किया था और पंजाबियों को बंग–भंग आंदोलन के इस महामंत्र से परिचित करवाया था। ऐसे परिवेश में बड़े होने वाले भगत सिंह के मन पर, पंजाब के महान क्रांतिकारी करतार सिंह सराभा जिन्हें 19 वर्ष की आयु में फांसी दी गई थी, का गहरा प्रभाव था। अमृतसर के जलियांवाला बाग कांड के बाद वे स्कूल से भाग कर अमृतसर पहुंचे और लहू से भीगी हुई मिट्टी एक शीशी में भर कर घर लाए। आख़िर तक वह शीशी उन्हें प्रेरणा देती रही। डीएवी हाई स्कूल से मैट्रिक पास करके उन्होंने लाहौर में नवस्थापित नेशनल इंटर कॉलेज में दाखिला लिया। और यहीं से भगत सिंह का क्रांतिकारी सफर शुरू हुआ। इस समय तक भगत सिंह ने अपने ज्ञान में इतनी वृद्धि कर ली थी कि वे विश्व और भारत की समस्याओं को खुले मन से समझने लगे थे। इस दौरान भगत सिंह के मन में हिन्दी, संस्कृत और अन्य भारतीय भाषाओं के प्रति गहरी रुचि उत्पन्न हुई। हिन्दी और संस्कृत का उन्हें गहरा ज्ञान था। हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयाग द्वारा प्रायोजित कई प्रतियोगिताओं में उन्हें हिन्दी निबंध लेखन में पुरस्कार भी मिले थे। भारतीय भाषाओं के इन संस्कारों के कारण वे गहराई से भारत की सांस्कृतिक अस्मिता को भी पहचानते थे।

> *'युवक ही रणचण्डी के ललाट की रेखा हैं'। युवक स्वदेश की यश दुन्दुभि का तुमुल निनाद हैं। युवक ही स्वदेश की विजय वैजयंती का सुदृढ़ दण्ड हैं। वह महाभारत के भीष्म की पहली ललकार के समान विकराल हैं, रावण के अहंकार की तरह निर्भीक हैं, प्रह्लाद के सत्याग्रह की तरह दृढ़ और अटल हैं।*

घर में शादी की बात चलने पर घर से भाग कर वे कानपुर पहुंचे। अपने पिताजी को एक पत्र लिखा जिसमें कहा कि मेरे यज्ञोपवीत के समय आपने मुझे देश सेवा के लिए समर्पित किया था। इसलिए मेरा जीवन इसी काम के लिए है। कानपुर पहुंच कर आपने अपना नाम बलवंत रखा और एक पत्रिका में काम करने लगे। क्रांतिकारी विचारों वाले एक युवा लेखक और चिंतक के रूप में आप विकसित होने लगे। यहीं पर गणेश शंकर विद्यार्थी जी के माध्यम से आप 'हिन्दुस्तान रिपब्लिकन एसोसिएशन' के सदस्य बने और भारतीय क्रांतिकारी आंदोलन के सिरमौर, चंद्रशेखर आजाद के संपर्क में आए। इस के साथ ही भारतीय स्वाधीनता आंदोलन का सबसे रोमांचक दौर शुरू हुआ।

सन् 1928 में साइमन कमीशन भारत आया। लाला लाजपत राय के नेतृत्व में भगत सिंह व साथियों ने ज़ोरदार विरोध किया। पुलिस कप्तान के डंडों की मार से लालाजी घायल हो गए और 17 नवम्बर 1928 को उनकी मृत्यु हो गई। भगत सिंह इस राष्ट्रीय अपमान का बदला लेने को आतुर हो गए और लालाजी की मृत्यु के ठीक मासिक श्राद्ध दिवस अर्थात् 17 दिसम्बर 1928 को सांडर्स की हत्या कर दी गई। हत्या के बाद पूरे शहर में भगत सिंह द्वारा लिखे गए पोस्टर चिपकाए गए जिनमें लिखा था कि–"हम मानव जीवन का सम्मान करते हैं। किसी इन्सान की हत्या का हमें दुख है परन्तु सांडर्स सिर्फ एक व्यक्ति नहीं था, वह एक अत्याचारी व शोषक शासन तंत्र का हिस्सा था। इसे मारकर हमने इस तंत्र पर प्रहार किया है।" अपने केश कटवाकर, वेश बदलकर प्रसिद्ध क्रांतिकारी श्री भगवतीचरण की पत्नी दुर्गा

देवी और नन्हें से बच्चे के साथ लाहौर से सुरक्षित बच निकले।

ब्रिटिश सरकार द्वारा दो काले कानूनों 'पब्लिक सेफ्टी बिल' और ' ट्रेड डिस्प्यूट बिल' के माध्यम से भारतीय जनता का उत्पीड़न और तेज़ करने के मंसूबों ने भगत सिंह को विचलित कर दिया। उन्होंने महसूस किया कि अंग्रेजों के बहरे कानों को आज़ादी का मंत्र ख़ामोशी से नहीं सुनाई देगा बल्कि उसे पूरे विश्व को सुनाते हुए स्वतंत्रता के अधिकार की आवाज़ को पक्के इरादे के साथ चरमोत्कर्ष पर पहुंचाना चाहिए। इसी उद्देश्य की पूर्ति के लिए भगत सिंह ने अपने साथी बटुकेश्वर दत्त के साथ मिलकर 8 अप्रेल 1929 को दिल्ली के असैंबली भवन में बम फेंके। 'नौजवान भारत सभा' जिसके संचालक स्वयं भगत सिंह थे, ने बम कांड की जिम्मेदारी क़बूल की। भगत सिंह और बटुकेश्वर दत्त के वक्तव्यों की लाखों प्रतियां भारत के ने–कोने में पहुंचाई गईं। 'इंकलाब ज़िंदाबाद' का नारा इन्हीं प्रतियों के माध्यम से देश भर में गूंजा। पूरा विश्व भारतीय युवाओं के इस कारनामे से अचम्भित रह गया। अदालत में दिए गए भगत सिंह के बयानों को समाचार पत्रों के माध्यम से पूरे विश्व ने पढ़ा और अत्याचारी ब्रिटिश साम्राज्यवाद के विरुद्ध देश भर में ज्वार उठना शुरू हो गया। जेल में भी अधिकारियों के बर्बरतापूर्ण व्यवहार का विरोध भगत सिंह व उनके साथियों ने भूख हड़ताल से किया और अन्ततः अंग्रेज सरकार को झुकना पड़ा।

7 अक्टूबर 1930 की सुबह को विशेष दूत के माध्यम से कारावास में भगत सिंह, राजगुरू और सुखदेव को फांसी की सज़ा सुनाई गई। फांसी पर लटकाए जाने से 3 दिन पूर्व 20 मार्च 1931 को पंजाब के गवर्नर को भगत सिंह व उनके साथियों ने एक मांग पत्र भेजा जिसमें कहा–"हम आपसे केवल यह प्रार्थना करना चाहते हैं कि आपकी सरकार के ही एक न्यायालय के निर्णय के अनुसार हमारे विरुद्ध युद्ध जारी रखने का अभियोग है। इस स्थिति में हम युद्ध बंदी हैं, अतः इस आधार पर हम आपसे मांग करते हैं कि हमारे साथ युद्धबंदियों सा व्यवहार किया जाए और हमें फांसी देने के बदले गोली से उड़ा दिया जाए।" इस पत्र ने अंग्रेजों के निर्णय का न केवल मज़ाक उड़ाया, बल्कि दिखा दिया कि मौत भी भारतीय युवाओं के मन में ख़ौफ पैदा नहीं कर सकती। अंग्रेज इतने भयभीत हो गए कि तय समय से एक दिन पहले ही 23 मार्च 1931 को सांयकाल में ही इन महान क्रांतिकारियों को फांसी दे दी गई। अपनी फांसी से पूर्व भगत सिंह ने अपने भाई कुलतार सिंह को पत्र में लिखा–"सुबह की लालिमा में मेरे भाग्य की इस त्रासदी को कौन टाल सकता है। इससे कोई फर्क नहीं पड़ता बेशक पूरा विश्व हमारे विरोध में खड़ा हो जाए। मेरे प्यारे भाई मेरे जीवन का अन्त निकट है। भोर के तारे की तरह मेरा जीवनदीप शीघ्र ही प्रभात के आलोक में समा जाएगा। हमारे आदर्श बिजली की कौंध की तरह पूरे विश्व में जागृति पैदा कर देंगे। फिर यदि मुट्ठी भर राख नष्ट भी हो जाए तब भी दुनिया का इससे कुछ भी संवरता बिगड़ता नहीं है।"

मेरे प्यारे भाई मेरे जीवन का अन्त निकट है। भोर के तारे की तरह मेरा जीवनदीप शीघ्र ही प्रभात के आलोक में समा जाएगा। हमारे आदर्श बिजली की कौंध की तरह पूरे विश्व में जागृति पैदा कर देंगे।

भगत सिंह सच्चे अर्थों में राष्ट्रनायक थे जो अपनी मातृभूमि के लिए अपने प्राण न्यौछावर कर गए। परन्तु दुर्भाग्य से भारत के कुछ अधकचरे विद्वानों ने भगत सिंह पर मार्क्सवाद का ठप्पा लगा कर इस महान राष्ट्रवादी नायक के क़द को छोटा करने का दुष्प्रयास किया है। भगत सिंह के वैचारिक पक्ष को समझने के लिए उनके पूरे विचारों को सम्पूर्णता से समझना होगा। भगत सिंह ने मुक़द्दमे के दौरान अपने बचाव में जो बयान दिया है वह इतिहास की धरोहर है। जिसमें उन्होंने कहा कि अंग्रेजों के विरुद्ध संघर्ष में भारतीय युवाओं के प्रेरणा स्रोत गुरू गोविंद सिंह और छत्रपति शिवाजी हैं। आज वन्देमातरम् को साम्प्रदायिक कहने वाले मार्क्सवादियों को भगत सिंह के ये विचार पढ़ लेने चाहिएं–"ऐ भारतीय युवक! तू क्यों गफलत की नींद में पड़ा बेख़बर सो रहा है। उठ, आँखें खोल, देख प्राची दिशा का ललाट सिन्दूर रंजित हो उठा है। अब अधिक मत सो। सोना हो तो अनन्त निद्रा की गोद में जाकर सो रह। कापुरुषता के क्रोड़ में क्यों सोता है?माया और मोह त्याग कर गरज उठ–

Farewell farewell my true love
The army is on move
And if stayed with you love
The covered I shall prove

तेरी माता, तेरी प्रातः स्मरणीया, तेरी परम वन्दनीया, तेरी जगदम्बा, तेरी अन्नपूर्णा, तेरी त्रिशूलधारिणी, तेरी सिंहवाहिनी, तेरी शस्यश्यामलांचला आज फूट–फूट कर रो रही है। क्या उसकी विकलता तुझे तनिक भी चंचल नहीं करती। धिक्कार है तेरी निर्जीवता पर। तेरे पितर भी नतमस्तक हैं इस नपुंसकत्व पर। यदि अब भी तेरे किसी अंग में टुक हया बाकी हो, तो उठकर माता के दूध की लाज रख, उसके उद्धार का बीड़ा उठा, उसके आंसुओं की एक–एक बूंद की सौगंध ले, उसका बेड़ा पार कर और बोल मुक्त कंठ से वंदेमातरम्।" भारत माता के प्रति अगाध श्रद्धा रखने वाले इस महान राष्ट्रवादी नायक की जन्मशती पर उन्हें शत्–शत् प्रणाम।

शिक्षा का स्वरूप कैसा हो

–हिमांशु शेखर

छात्र किसी भी राष्ट्र की धुरी होते हैं और शिक्षा उनके चरित्र का निर्माण करती है। छात्र को जिस तरह की शिक्षा मिलेगी, उसका व्यक्तित्व भी उसी तरह का होगा। विद्यार्थी तो कच्ची मिट्टी के समान होते हैं, जिसे मनचाहे रूप में ढाला जा सकता है। जिसका एक बार किसी रूप में ढल जाने के बाद दूसरे रूप में परिवर्तित होना काफी मुश्किल होता है। इसलिए छात्रों को पढ़ाई जाने वाली सामग्री का निर्णय काफी सोच–समझ कर लिया जाना चाहिए। पिछले कुछ समय से भारत में शिक्षा का राजनीतिकरण ज़ोरों पर है।

सत्ताधारी दल अपनी विचारधारा को छात्रों के मन में आरोपित करने के लिए पाठ्यक्रम के साथ छेड़–छाड़ कर रहे हैं। राजनीतिक दल छात्रों को भावी वोटर के तौर पर देख रहे हैं न कि देश के भविष्य के रूप में।

शिक्षा के स्वरूप में परिवर्तन के औचित्य और विवाद पर हमने शिक्षाविदों और छात्रों से बात कर उनकी राय जानने की कोशिश की।

दिल्ली विश्वविद्यालय में शोध के छात्र **सत्यव्रत** के मुताबिक शिक्षा का स्वरूप इस तरह का हो जो विद्यार्थियों को पर्याप्त ज्ञान और कौशल से परिपूर्ण कर सके। साथ ही शिक्षा मूल्य आधारित होनी चाहिए। शिक्षा का स्वरूप इस तरह का हो जो युवाओं को देश के परिवर्तनशील सामाजिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक वातावरण में सहभागिता निभाने के लिए तैयार कर सके। देश की शिक्षा नीति इस तरह से बने कि उच्च शिक्षा में नामांकन दर बढ़े तथा समाज के कमज़ोर वर्गों को भी शिक्षा मिल सके। भारत में शिक्षा को अनुसंधानपरक बनाए जाने की आवश्यकता है। साथ ही शिक्षण संस्थानों में सरकारी हस्तक्षेप न हो और संस्थानों को अधिक से अधिक स्वायत्तता मिलनी चाहिए। छात्रों को क्या पढ़ाए जाए इसका निर्णय सरकार और उसकी कठपुतलियों द्वारा नहीं किया जाना चाहिए। क्योंकि ये तो पाठ्यक्रम भी वोट बैंक की राजनीति से प्रेरित होकर बनाते हैं। पाठ्यक्रम में किसी ऐसी बात को शामिल नहीं किया जाना चाहिए जो देशवासियों की आस्था और सम्मान के विरुद्ध हो। बढ़ती वैश्विक प्रतिस्पर्धा के कारण देश में व्यवसायिक पाठ्यक्रमों के विस्तार की ज़रूरत है।

जानकी देवी मेमोरियल कॉलेज की प्राध्यापिका **डॉ.सीमा शर्मा** के मुताबिक शिक्षा का स्वरूप ऐसा होना चाहिए जिसमें व्यवसायिकता को भरपूर स्थान दिया जाए। वह काग़ज़ी ज्ञान भर न रहे बल्कि रोजगारोन्मुखी हो। साथ ही जो नैतिक मूल्यों का ह्रास हो रहा है शिक्षा का स्वरूप निर्धारित करते समय इसे ध्यान में रखा जाना चाहिए। शिक्षा में नैतिक मूल्यों को स्थान दिया ही जाना चाहिए। जहां तक सवाल पाठ्यक्रम तैयार करने का है तो इसमें राजनैतिक दलों को दूर ही रखा जाना चाहिए। शैक्षिक जगत के तटस्थ विद्वान पाठ्यक्रम तैयार करें। यह पाठ्यक्रम तटस्थ, नियंत्रित होना चाहिए। तटस्थ विद्वत परिषद् को इतनी शक्ति प्रदान की जाए कि राजनैतिक दलों के स्वार्थों को स्थान न मिल पाए। ज़ाहिर है कि जब पाठ्यक्रम राजनैतिक दलों के स्वार्थ से अछूता रहेगा तो किसी समुदाय की भावनाओं को ठेस पहुंचाने वाली बातें पाठ्यक्रम में शामिल नहीं हो पाएंगी। शिक्षा का स्वरूप व्यापक सामाजिक हितों को ध्यान में रखकर तय किया जाना चाहिए।

दिल्ली विश्वविद्यालय में शोध कर रही **परविंदर कौर** का मानना है कि शिक्षा के स्वरूप का निर्धारण विशेषज्ञों की समिति करे। और शिक्षा के स्वरूप का निर्धारण करते समय विभिन्न वर्गों से राय ली जानी चाहिए। शिक्षकों, छात्रों के साथ मुख्य रूप से नियोक्ताओं के विचारों के आधार पर पाठ्यक्रम बनाया जाए। इसमें अभिभावकों की राय भी ली जानी चाहिए। साथ ही शिक्षा को समसामयिक बनाया जाना चाहिए। पाठ्यपुस्तकों में नए लोगों को भी स्थान दिया जाना चाहिए। समकालीन महान व्यक्तियों के जीवन और कार्यों को भी पाठ्यक्रम में शामिल किया जाना चाहिए। जहां तक बात नैतिक शिक्षा के प्रसार की है तो यह कार्य रोचक कहानियों के माध्यम से हो सकता है। शिक्षा में आरक्षण ज़रूरतमंदों को ही मिलना चाहिए। शिक्षा के स्वरूप में परिवर्तन होना ही चाहिए क्योंकि परिवर्तन ही संसार का नियम है। दुनिया बदली है, परिस्थितियां बदली हैं इसलिए बदलाव को टाला नहीं जा सकता। पर यह बदलाव अतीत को प्रासंगिक बनाते हुए किया जाना चाहिए।

गढ़वाल विश्वविद्यालय में स्नातकोत्तर के छात्र **पंकज चांदना** के अनुसार देश की शिक्षा का स्वरूप इस तरह का होना चाहिए जो समाज का सही रूप प्रस्तुत कर सके। साथ ही शिक्षा समाज के हर वर्ग को उपलब्ध होनी चाहिए। सरकारी शिक्षण संस्थानों का स्तर ऊँचा किया जाना चाहिए। ताकि ये संस्थान निजी संस्थानों से प्रतिस्पर्धा कर सकें। वर्तमान स्थिति यह है कि सरकारी संस्थानों के छात्रों को रोजगारोन्मुख शिक्षा के लिए निजी संस्थानों का रुख करना पड़ रहा है। इसे हर हाल में रोका जाना चाहिए साथ ही पूरे शिक्षा तंत्र को आवश्यकता के अनुसार बनाया जाए। आज अगर निजी संस्थान के छात्रों को बहुराष्ट्रीय कंपनियां प्राथमिकता दे रही हैं तो इसके लिए व्यवहारिक शिक्षा जिम्मेदार है। जिसका सरकारी शिक्षण संस्थानों में अभाव होता है। साथ ही सरकारी शिक्षण संस्थानों के प्रतिष्ठित पाठ्यक्रमों में सीटों की संख्या बढ़ाई जानी चाहिए। जहां तक सवाल है पढ़ाए जाने वाली सामग्री के निर्धारण की, तो यह कार्य राजनैतिक व्यक्तियों द्वारा तो होना ही नही चाहिए। इसके लिए देश के प्रमुख शिक्षाविदों की एक समिति बनाई जानी चाहिए। इस समिति में विश्वविद्यालयों के उपकुलपतियों को शामिल किया जा सकता है। इसके अलावा पाठ्यक्रम निर्धारण के वक्त शिक्षकों, छात्रों, नियोक्ताओं, अभिभावकों एवं समाज के बुद्धिजीवी वर्ग से भी राय ली जानी चाहिए। और सकारात्मक सुझावों के अनुरूप पाठ्यक्रम का निर्धारण किया जाना चाहिए। कोई भी ऐसी बात नहीं पढ़ाई जानी चाहिए जो किसी ख़ास वर्ग की भावनाओं को आहत करे।

भारतीय विद्या भवन में पत्रकारिता स्नातकोत्तर के छात्र **अभय कुमार सिंह** के मुताबिक शिक्षा में राजनीति का प्रवेश बिल्कुल अनुचित है। सत्ता में रहने वाली पार्टी वोट की राजनीति के कारण पाठ्यक्रमों में अपने अनुसार बदलाव करती है। जिससे छात्रों में भ्रम की स्थित उत्पन्न हो जाती है। इसे छात्रों व शिक्षा के साथ अन्याय ही कहा जा सकता है। भारत में शिक्षा का स्वरूप इस तरह का होना चाहिए कि छात्रों की सोच विस्तृत हो सके। शिक्षा के स्वरूप में बदलाव का अधिकार सरकार के पास नहीं होना चाहिए। भारत के राष्ट्रपति को देश के प्रख्यात एवं प्रामाणिक शिक्षाविदों की एक समिति का गठन करना चाहिए। इसी समिति को पाठ्यक्रम में फेरबदल का अधिकार मिलना चाहिए। पाठ्यपुस्तकों में ऐसी बातें शामिल न की जाएं जो किसी की धार्मिक भावनाओं को ठेस पहुंचाती हों। वही पढ़ाया जाना चाहिए जो देश की एकता और अखंडता बनाए रखने में सहायक हों। विज्ञान जैसे विषयों को रोचक बनाकर पढ़ाया जाना चाहिए। कला की पढ़ाई पुस्तकों तक ही सीमित नहीं हो बल्कि उसे उस रूप में पढ़ाया जाए जिससे छात्रों की सृजनात्मक क्षमता का विकास हो। इतिहास की पुस्तकों में अप्रामाणिक बातों को शामिल नहीं किया जाना चाहिए।

जानकी देवी कॉलेज में प्राध्यापिका **डॉ. उमा नामि** के अनुसार शिक्षा में राजनीतिक हस्तक्षेप नहीं होना चाहिए। शिक्षा के स्वरूप का निर्धारण राजनैतिक व्यक्तियों द्वारा नहीं किया जाना चाहिए। क्योंकि इसका निर्णय वोटबैंक की राजनीति से प्रेरित होता है। शिक्षा के स्वरूप के निर्धारण में अकादमिक व्यक्तियों का एक बोर्ड बनना चाहिए जो पूर्णतः निष्पक्ष होकर छात्रों एवं देश के हित में पाठ्यक्रम का निर्धारण कर सके। इसके साथ–साथ धर्म के आधार पर शिक्षा का राजनीतिकरण सही नहीं है। शिक्षा के क्षेत्र में सरकार की भूमिका सहयोगी की होनी चाहिए न कि शासक की। शिक्षण संस्थानों को आर्थिक तौर पर मजबूत बनाए जाने की आवश्यकता है। पाठ्यक्रम के निर्धारण से पहले इस संदर्भ में छात्रों और शिक्षकों के विचार भी लेने चाहिए। और उसके अनुरूप ही पाठ्यक्रम निर्धारित किया जाना चाहिए। डॉ.नामि ने अंत में कहा कि शिक्षा के क्षेत्र में सकारात्मक बदलाव तब ही लाए जा सकते हैं जब राजनेता दलगत राजनीति से ऊपर उठें।

परिचर्चा

आतंकवाद को रोकने के लिये सरकार को क्या कदम उठाने चाहिए?

इस विषय पर 'राष्ट्रीय छात्रशक्ति' द्वारा परिचर्चा आयोजित है। इस परिचर्चा में पाठकों के विचार आमंत्रित हैं। अधिक से अधिक 500 शब्दों में अपने विचार स्पष्ट रूप से लिखकर या टाइप करवाकर पासपोर्ट आकार के अपने एक चित्र के साथ 30 नवम्बर तक प्रेषित करें। प्राप्त उत्तर नवम्बर–दिसम्बर अंक में प्रकाशित किये जायेगे

सम्पादक
'राष्ट्रीय छात्रशक्ति
136, नॉर्थ एवेन्यू, नई दिल्ली–110001

मजहबी आरक्षण से देश टूटेगा : अतुल कोठारी

अलीगढ. : महाराणा प्रताप कॉलेज जंगल धूसड़ में "मजहबी आधार : देश विभाजन की पुनः तैयारी" विषयक व्याख्यान में अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद् के सह संगठन मंत्री अतुल भाई कोठारी ने रविवार को कहा कि मजहबी आरक्षण से देश टूटेगा। वहीं कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे पूर्व कुलपति प्रो. यू पी सिंह ने कहा कि देश विभाजन के लिए कांग्रेस व मुस्लिम नेतृत्व जिम्मेदार है। एमएलसी डॉ. वाई डी सिंह ने कहा कि मजहबी आधार पर आरक्षण अन्यायपूर्ण है।

बतौर मुख्य वक्ता श्री कोठारी ने कहा कि अदूरदर्शी राजनीति एवं स्वार्थ में अंधी नौकरशाही जाने–अनजाने ऐसी नीतियों को प्रोत्साहित कर रही है जिससे देश विभाजन का खतरा उत्पन्न होता है। किन्तु देश का बंटवारा नई पीढ़ी नहीं होने देगी। मजहबी आधार पर आरक्षण वोट के सौदागर राजनीतिज्ञों की ऐसी ही विभाजनकारी नीति है।

श्री कोठारी ने कहा कि वर्षों तक इस देश पर दूसरे देश के लोगों ने शासन किया लेकिन कभी भी पूरे देश ने गुलामी स्वीकार नहीं की। आक्रमण होते रहे लेकिन आक्रमणकारियों के खिलाफ संघर्ष भी जारी रहा। उन्होंने कहा कि मुसलमानों को खुश करने के लिए कांग्रेस के अधिवेशनों में राष्ट्रीय आंदोलन का प्रेरणागीत वंदेमातरम् खण्डित रूप में गाया जाने लगा। मुसलमानों के नाराज होने के डर से ध्वज भगवा रंग का नहीं रखा गया।

इसके पूर्व विशिष्ट अतिथि विधान परिषद् सदस्य डॉ. वाई डी सिंह ने कहा कि आरक्षण की वर्तमान जाति आधारित व्यवस्था से देश की प्रतिभाएं कुण्ठित हो रही हैं। कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे पूर्व कुलपति प्रो. यू पी सिंह ने कहा कि इस देश के विभाजन के जिम्मेदार शिक्षित मुसलमान और कांग्रेस का नेतृत्व है। आज भी संयोग से वे दोनों तत्व विराजमान हैं। इजराइल ने हमला किया लेबनान में बैठे आतंकवादी संगठन पर और भारत में वामपंथी नेताओं और मुस्लिम बुद्धिजीवियों ने मांग की।

कार्यक्रम का संचालन महाविद्यालय के वाणिज्य विभाग के प्रवक्ता डॉ.अरविंद शुक्ल ने किया। प्रस्ताविकी भूगोल विभाग के प्रवक्ता डॉ. विजय कुमार चौधरी ने रखी। स्वागत महाविद्यालय के छात्र अशोक कुमार श्रीवास्तव, रत्ना तिवारी, स्नेहा पाठक, प्रियंका दुबे ने किया। कार्यक्रम में मुख्य रूप से विभाग प्रचारक श्रीराम जी, डॉ. सतीश द्विवेदी, डॉ. राजसरन शाही, डॉ. यू पी सिंह, डॉ. कैलाश सिंह, प्रो. हरेन्द्र सिंह, वीरेन्द्र सिंह और डॉ. प्रदीप राव उपस्थित थे।

वंदेमातरम् गाने पर बेटे को किया बेदखल

पिता ने माना, समाज और मजहब के दबाव में लिया फैसला

सादाबाद– गुलचमन शेरवानी ने वंदेमातरम् क्या गाया, जमाना उसका दुश्मन हो गया। पिता ने उसे संपत्ति से बेदखल करने का नोटिस भेज दिया। लेकिन अब वे स्वीकार करते हैं कि उन्होंने समाज और मजहब के दबाव में ये नोटिस भेजा है। गुलचमन के पिता गुलबहार की मानें तो स्कूली छात्र के रूप में उन्होंने खुद भी वंदेमातरम् गाया है, लेकिन अब बात दूसरी है। उनका कहना है कि यह फैसला भले ही मेरा न हो लेकिन वे इसे वापस नहीं लेंगे।

जानकारी के अनुसार सादाबाद के मूल निवासी एक युवक गुलचमन शेरवानी ने उलेमा और मौलाना के फतवे के विरुद्ध वंदेमातरम् गाया था। यही नहीं उसने आगरा में एसएसपी को प्रार्थना पत्र देकर इस मामले में मौलाना के विरुद्ध राष्ट्रद्रोह का मुकदमा चलाने की भी मांग की थी। इतना ही नहीं, बाद में वह 14 अगस्त से आगरा में दीवानी चौराहे पर भारत माता की प्रतिमा के समक्ष अनिश्चितकालीन अनशन पर बैठ गया था। 21 अगस्त को गुलचमन को प्रशासन ने जैसे–तैसे अनशन से उठाया। इस पूरे मामले में नया मोड़ उस समय आया, जब गुलचमन के पिता ने उसे इसी कारण अपनी जायदाद से बेदखल करने का नोटिस भेज दिया, क्योंकि उसने वंदेमातरम् गाया था।

नोटिस में गुलचमन के पिता गुलबहार ने कहा था कि उसका पूरा परिवार इस्लाम को मानने वाला है, लेकिन गुलचमन ने इस्लाम विरोधी गीत गाया है! हालांकि गुलचमन के पक्ष में उसकी मां बेगम सलमा आकर खड़ी हो गई और मां ने कहा कि मुसलमानों को वंदेमातरम् गाने से परहेज नहीं करना चाहिए। उसने यह भी कहा कि वह बेटे के साथ है और पति के खिलाफ कानूनी लड़ाई लड़ेगी।

THINK INDIA WORKSHOP

Bangalore : A one day workshop was organized on Sept 2 at the Urban Youth and Health Centre at Bangalore. This workshop was organized as a preparatory program to the mega event in January. The event is aimed at developing a nationalistic views and thoughts among the professional students. It is also aimed at networking all the Indian premiere institutes' students community and establishing a nationalistic force in these institutes by encashing the tende1ncy of these students towards spirituality. The program thus focuses mainly on students of IIM, IIT, NLS, IISc Research and Medical institutes etc.

The program was a prelude to the upcoming mega program in January where more than 1000 students from the mentioned institutes from all the southern states will take part.

120 students attended the workshop from 24 different professional institutes.

Their leaders inaugurated the workshop being one for the students and youth only. Sri Hari Bharti, President of Student Council IIMB and Shri Vatsha of IISc inaugurated the function. Prof. Shri Mahadevan Editor Management Review, a new journal of IIMB spoke on "India's role in emerging world's order, pride, future and possibilities".

And Shri Dattatreya Hosabale, Saha Boudhik Pramukh of RSS presented a slide show on "A challenge to the identity of the idea of Bharath".

Shri Mahadevan in his speech pointed out India's place in the ranking amongst the developed nations. He inserted that India will lead the world in the coming years as it is capable to do so. Prof. Mahadevan posed the questions on what are our background and our potentials to the gathered crowd. According to a Global Competition report India was ranked 49th in 1997. The same report (Goldman Satch's Report) ranked India at the 25th place in 2002. It also tells that India and China are the only competitors to lead the world by 2020. India will soon overtake China in industrial quality production.

To prove the greatness and its fast growing power Prof. cited a few examples of India ruling the textile industry, India overtaking leading countries like Brazil, Russia, Italy and China in automobile industry. He also mentioned India's huge potential in the filed of electric and electronics, automobile spare parts, chemical industries etc.

We have a golden past of more than 3000 years compared to others of less than 600 years. At last he left the audience with a statement that the challenge before us is to how to utilize our glorious past to the modern times.

Shri Dattatreya Hosabale in his presentation talked on the challenge to the idea and identity of Bharath. He highlighted on the challenges before Indians as sovereignty, security, unity and identity. These challenges can be faced by creating awareness among the mass and fight pseudo secularism and minority - appeasement policies.

A nationwide campaign to face these challenges wanted intellectual soldiers.

Many other prominent personalities like Shri P. V. Krishna Bhat, Syndicate Member Kuvempu University, Shri M. K. Shridhar, Reader Canara Bank School of Management, Shri K. N. Raghunandan National General Secretary, ABVP and Shri Vishnkant Chatpalli, professor PESIT, Bangalore were also present in the workshop.

अफजल को फांसी हर हाल में होनी चाहिए : रमेश पप्पा

अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद् के उत्तर क्षेत्र के संगठन मंत्री का दायित्व निभा रहे श्री रमेश पप्पा जी परिषद् के पूर्णकालिक कार्यकर्ता है। उन्होंने परिषद् के राष्ट्रीय महामंत्री, जम्मू प्रांत संगठन मंत्री जैसे कई महत्वपूर्ण दायित्वों का निर्वहन किया है, इसके साथ ही श्री रमेश पप्पा WOSY के महामंत्री भी है। राष्ट्रीय सुरक्षा के विषय पर उनसे उमाशंकर मिश्र की हुई बातचीत के संपादित अंश :

प्रश्नः– 'मोहम्मद अफजल गुरू' की फांसी की सज़ा पर आपका क्या मत है?

उत्तरः– मोहम्मद अफजल गुरू को फांसी की सज़ा पूरी न्यायिक प्रक्रिया के बाद मिली है। भारतीय लोकतंत्र के स्तंभ संसद पर हमला भारतीय अस्मिता पर हमला था। इसलिए अफजल को फांसी हर हाल में होनी चाहिए। ताकि पूरी दुनिया को संदेश दिया जा सके कि आतंकवादियों के लिए में भारत कोई स्थान नहीं है।

प्रश्नः– कुछ राजनैतिक दल व नेता अफजल की फांसी की सज़ा माफ करने की मांग कर रहे हैं, आप का क्या मत है?

उत्तरः– यह बहुत ही दुर्भाग्यपूर्ण है कि भारतीय संविधान की शपथ लेकर मुख्यमंत्री की कुर्सी पर बैठे गुलाम नबी आजाद सहित मुफ्ती मोहम्मद सईद, फारूख अब्दुल्ला और वामपंथी पार्टियां अफजल की सज़ा माफ करने की मांग कर रहे हैं। दरअसल यह सारा खेल वोट बैंक की राजनीति का है। ये दल मुस्लिम वोटों के लालच में देश की सुरक्षा के साथ खिलवाड़ करने से भी गुरेज नहीं कर रहे हैं। यहां तक कि धमकीपूर्ण भाषा का प्रयोग किया जा रहा है कि यदि अफजल की सज़ा माफ नहीं की गई तो देश में हालात बिगड़ जाएंगे। इस प्रकार की भाषा प्रयोग करने के लिये इन नेताओं पर देशद्रोह के केस दर्ज होने चाहिए।

प्रश्नः– इस पूरे मामले में केन्द्र सरकार व कांग्रेस पार्टी की आप क्या भूमिका देखते हैं?

उत्तरः– कांग्रेस पार्टी के ही एक मुख्यमंत्री द्वारा केन्द्र सरकार को अफजल की सज़ा माफ करने के बारे में पत्र लिखने पर कांग्रेस व सरकार की चुप्पी निराशाजनक है। ऐसा प्रतीत हो रहा है कि इस पूरे मामले में केंद्र सरकार भी दोषी है। इसलिए चिंता इस बात की है कि आज देश सुरक्षित हाथों में नहीं है।

प्रश्नः– इन हालात में विद्यार्थी परिषद् की क्या भूमिका रहने वाली है?

उत्तरः– विद्यार्थी परिषद् हमेशा से देश की सुरक्षा के विषयों पर गंभीर रही है। इस विषय पर भी देश द्रोहियों का साथ देने वाले राजनैतिक दलों व नेताओं की करतूतों को जनता के समक्ष उजागर करने के लिए परिषद् देश भर में अभियान चलाएगी। परिषद् महामहिम राष्ट्रपति जी से भी निवेदन करेगी कि अफजल की फांसी की सज़ा को किसी भी कीमत पर कम न किया जाए। इसके अतिरिक्त आंदोलन के माध्यम से केन्द्र सरकार पर भी दबाव बनाया जाएगा कि वह राष्ट्रीय हितों से कोई भी समझौता न करे। इस सम्बन्ध में विद्यार्थी परिषद् देश की छात्र शक्ति को देश द्रोहियों के खिलाफ आन्दोलन के लिए एकजुट करेगी।

उत्तरप्रदेश

छात्रों के कैरियर से खिलवाड़

चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय में मूल्यांकन घोटाला, विद्यार्थी परिषद् का आंदोलन

मेरठ–वर्ष 2005–06 के शिक्षण सत्र की उत्तर पुस्तिकाओं का मूल्यांकन कक्षा पांच, इंटर और स्नातक स्तर के छात्रों से करवा कर चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय के छात्रों के जीवन से खिलवाड़ की पराकाष्ठा ही नहीं हुई, वरन् विवि में मूल्यांकन में हो रहे घोटाले की भी कलई खुली। विद्यार्थी परिषद् काफी लम्बे अरसे से इस विश्वविद्यालय में केंद्रीय मूल्यांकन की मांग करती आई है। साथ ही मूल्यांकन योग्य शिक्षकों से एवं समयावधि में हो सके, इसको लेकर भी सत्र के प्रारंभ में ही विश्वविद्यालय में तत्कालीन कुलपति का कार्य देख रहे कमिश्नर को ज्ञापन भी सौंपा था। जिससे परीक्षा कार्य ठीक हो सके, साथ ही परीक्षा फल समय पर घोषित हो। लेकिन विश्वविद्यालय के प्रशासनिक अधिकारियों ने मूल्यांकन को भी मज़ाक बना दिया और आगरा में छोटे–छोटे बच्चों से पुस्तिकाओं का मूल्यांकन ही नहीं कराया वरन् उनको एक सूची भी सौंपी कि किस अनुक्रमांक को कितने अंक देने हैं। जिन कॉपियों के मूल्यांकन का घोटाला पकड़ में आया उनमें मैडिकल, बी.बी.ए., एल.एल.बी. और बी.सी.ए. की उत्तर पुस्तिकाएं सम्मिलित थीं। घोटाले का भंडाफोड़ होने पर और भी कई चौंकाने वाले रहस्य खुलते चले गए। हज़ारों उत्तर पुस्तिकाएं विश्वविद्यालय में ही चीफ प्रोक्टर के कक्ष में से मिलीं और विश्वविद्यालय रजिस्ट्रार के आगरा स्थित घर से उत्तर पुस्तिकाओं के बंडल बरामद हुए। खेतों में भी काफी पुस्तिकाएं पड़ी मिलीं जिन्हें प्रशासन ने सील कर दिया है। स्वयं रजिस्ट्रार का पुत्र इस सारे रैकेट के संचालन में गिरफ्तार किया गया और विश्वविद्यालय के रजिस्ट्रार भी फरार हो गए। साथ ही इसमें और भी कई अधिकारियों के संलिप्त होने की आशंका बनी है।

उक्त घोटाले का पर्दाफाश होते ही विद्यार्थी परिषद् ने आंदोलन एवं तुरंत विश्वविद्यालय में छात्रसंघ अध्यक्ष ईश्वर सागर के नेतृत्व में प्रदर्शन करके कुलपति कार्यालय पर ताला डाल दिया एवं शाम को कुलपति का पुतला दहन किया।

इसके पश्चात अगले दिन से विश्वविद्यालय क्षेत्र के सभी जिलों में विद्यार्थी परिषद् ने आंदोलन प्रारंभ कर दिया। सभी महाविद्यालयों में बंद एवं प्रदर्शन करके शिक्षण कार्य बंद कराकर उत्तर पुस्तिका घोटाले में लिप्त अधिकारियों की गिरफ्तारी की मांग को लेकर ज्ञापन दिए।

विद्यार्थी परिषद् ने विश्वविद्यालय के अतिरिक्त अन्य सभी महाविद्यालयों के छात्रों को लेकर मेरठ के प्रसिद्ध बेगमपुल पर जाम लगाया तथा सिटी रेलवे स्टेशन पर भी रेल रोकने का प्रयास करने पर कार्यकर्ताओं पर लाठी चार्ज हुआ।

कुलपति ने 15 अगस्त को ध्वज फहराने का अधिकार खो दिया है। अतः छात्रों ने कुलपति से पूर्व स्वयं ध्वज फहराया एवं राष्ट्रगान गाया। विद्यार्थी परिषद् ने उक्त प्रकरण की सीबीआई जांच की मांग की है। कुलपति ने विद्यार्थी परिषद् के छात्र नेताओं को कई बार वार्ता के लिए बुलाया तथा उक्त प्रकरण की निष्पक्ष जांच का आश्वासन दिया। विद्यार्थी परिषद् ने उक्त उत्तर पुस्तिका घोटाले से प्रभावित छात्रों का परीक्षाफल अति शीघ्र घोषित करने की मांग की तथा बरामद कॉपियों की पुनः जांच की मांग की है।

विद्यार्थी परिषद् की विवि को चेतावनी

छात्रों ने बताईं समस्याएं

आगरा – छात्र समस्याओं तथा उत्तर पुस्तिकाओं में गोलमाल को लेकर अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद् के कार्यकर्ताओं ने विवि में हंगामा किया। नारे लगाते हुए परिषद् के कार्यकर्ता कुलपति सचिवालय के सामने बैठ गए। कार्यकर्ताओं ने विवि के गेट तथा ग्रिल पर पथराव किया।

सात अगस्त को अभाविप के कार्यकर्ताओं ने कुलपति को ज्ञापन दिया था। उसी ज्ञापन की मांगों पर कार्रवाई की जानकारी लेने विवि पहुंचे परिषद् के कार्यकर्ताओं ने विवि में जोरदार नारेबाजी की। विवि में विद्यार्थी परिषद् के कार्यकर्ताओं की भीड़ में प्रायोगिक परीक्षाओं की मांग को लेकर भटक रहे बीएड सत्र 2004–05 के छात्र भी शामिल थे। नारे लगाते हुए परिषद् के छात्र कुलसचिव के कार्यालय पहुंचे तो पता चला कि वे कुलपति से वार्ता करने गए हैं। यह सुनते ही छात्रों ने रुख कुलपति के सचिवालय की ओर किया। सचिवालय के कर्मचारियों ने छात्रों की भीड़ को देखते हुए सचिवालय की ग्रिल बंद कर

दी तो छात्र सचिवालय के अहाते में बैठ गए तथा सभा करनी शुरू कर दी। विभाग संगठन मंत्री अलंकार शर्मा ने कहा कि विवि के कार्यालयों में छात्रों की बजाय स्ववित्तपोषित संस्थानों की समस्याओं को निपटाने का दौर चल रहा है। बंद कमरों में फाइलें पिछली तिथियों में निपटाई जा रही हैं। बीएड सत्र 2004 के छात्र विवि में भटकते फिर रहे हैं। परीक्षा परिणाम लंबित हैं। महानगर मंत्री विनीत शर्मा ने कहा कि समस्याओं का समाधान करने में अक्षम कुलपति व कुलसचिव हमेशा विरासत का रोना रोते रहते हैं। विवि में प्रवेश की अंतिम तिथि 21 अगस्त है जबकि बीए, बीएससी व बीकॉम के परीक्षा परिणाम तक नहीं निकले हैं। छात्रों द्वारा की गई नारेबाजी के बाद कुलसचिव वीके सिन्हा छात्रों से बात करने आए तो छात्रों ने प्रश्नों का तांता लगा दिया। छात्रों की उत्तर पुस्तिकाएं दिखाने की मांग को कुलसचिव ने टालमटोल करने का प्रयास किया तो कुछ छात्र उत्तेजित हो गए तथा उन्होंने बाहर जाकर विवि के दरवाजे व सचिवालय की फेसिंग पर दो–चार पत्थर फेंके, जिसे वरिष्ठ कार्यकर्ताओं ने बंद कराया। परिषद् ने चेतावनी दी है कि अगर छात्रों की समस्याओं का अंत नहीं हुआ तो विद्यार्थी परिषद् बड़ा आंदोलन करेगी।

काशी में अर्जुन सिंह का विरोध

छात्रों पर लाठीचार्ज

काशी–मानव संसाधन विकास मंत्री अर्जुन सिंह का जगह–जगह पर विरोध किया गया। बीएचयू में अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद् के छात्रों को तितर–बितर करने के लिए पुलिस ने लाठियां चलाईं। सुरक्षा व्यवस्था को धता बताते हुए छात्र आयोजन स्थल तक पहुंच गए। स्वतंत्रता भवन के अंदर और बाहर पर्चे बांटे गए। यहां प्रगतिशील छात्र मंच के कार्यकर्ताओं पर सुरक्षाकर्मियों ने लाठियां भांजी। तीन छात्रों को पर्चा बांटते हुए समारोह स्थल से पकड़कर सुरक्षाकर्मियों ने बाहर किया। अरबिक विश्वविद्यालय जामिया सलफिया पहुंचने पर उन्हें कांग्रेस मुर्दाबाद के नारे सुनने को मिले। परिषद् के 15 कार्यकर्ताओं को पुलिस ने गिरफ्तार किया जिन्हें देर शाम छोड़ा गया। अर्जुन के आगमन की खबर पर एक सप्ताह पहले से ही विभिन्न छात्र संगठनों की ओर से विरोध प्रदर्शन का सिलसिला जारी था। शिक्षा के वामपंथीकरण, बीएचयू में शुल्क बढ़ोतरी और छात्रसंघ की बहाली न होने को लेकर छात्र विरोध कर रहे थे। अर्जुन सिंह बीएचयू के स्वतंत्रता भवन में सदभावना दिवस पर आयोजित संगोष्ठी में शिरकत करने आए थे। विवि के चप्पे–चप्पे पर पुलिस तथा सुरक्षाकर्मियों की तैनाती की गई थी ताकि कोई विरोध का साहस न जुटा सके। बीएचयू के स्वतंत्रता भवन में जब अर्जुन सिंह का कार्यक्रम शुरू हुआ तो परिषद् के तीन दर्जन कार्यकर्ता विरोध के लिए विश्वविद्यालय पहुंच गए। वे सारी सुरक्षा व्यवस्था को धता बताते हुए आयोजन स्थल के काफी करीब तक पहुंच गए।

राजस्थान

विद्यार्थी परिषद् की कन्या भ्रूण हत्या के खिलाफ रैली में उमड़ा छात्राओं का सैलाब

हजारों छात्राएं निकलीं सड़कों पर

जयपुर, 25 अगस्त। अभाविप के आवाह्न पर आयोजित कन्या भ्रूण हत्या विरोधी रैली में शहर की स्कूल, कॉलेजों की छात्राओं का सैलाब उमड़ पड़ा।

विद्यार्थी परिषद् के प्रदेश सहमंत्री लक्ष्मीकांत भारद्वाज ने बताया कि सुबह से ही कार्यक्रम स्थल मैडिकल कॉलेज के सामने छात्राओं के आने का सिलसिला शुरू हो गया तथा 11 बजे तक सभास्थल पर हज़ारों छात्राएं कन्या भ्रूण हत्या के विरोध पर परिषद् के बैनर तले पहुंच चुकीं थीं। 39 स्कूलों व 15 कॉलेजों से आई छात्राओं, राष्ट्रीय सेविका समिति, दुर्गावाहिनी, मदरसा बोर्ड, राष्ट्रवादी मुस्लिम मंच, खंडेलवाल समाज, जीवनआशा सामाजिक संगठन सहित अनेक संगठनों के प्रतिनिधियों व परिषद् के कार्यकर्ताओं को संबोधित करते हुए कार्यक्रम के मुख्य अतिथि भाजपा प्रदेशाध्यक्ष डॉ.महेश शर्मा ने कहा कि कन्या की हत्या से बड़ा पाप कोई नहीं है। अगर हमें हमारी संस्कृति की रक्षा करनी है, समाज में लिंग अनुपात को गिरने से रोकना है तो हमें कन्या भ्रूण हत्या को रोकना होगा। उन्होंने इसके लिए समाज को जागृत करने की आवश्यकता बताई व कहा कि विद्यार्थी परिषद् के द्वारा किया गया यह प्रयास निश्चित रूप से इस कार्य में मील का पत्थर साबित होगा।

सभा को संबोधित करते हुए परिषद् के राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ. कैलाश शर्मा ने कहा कि विद्यार्थी परिषद् ने समाज में अपने दायित्व को समझते हुए इस बुराई को जड़ से मिटाने की पहल की है और स्कूल कॉलेज के छात्रों को इस बुराई के प्रति जागृत कर एक सामाजिक क्रांति का सूत्रपात किया है, जो हमारे समाज से इस बुराई को उखाड़ फेंकेगी। उन्होंने कहा कि प्राचीन काल से इस देश में नारी को पूजा जाता है, जहां पर चींटी मारने को भी पाप समझा जाता है वहां कन्या की हत्या

तो महापाप है। कार्यक्रम के अध्यक्ष द्वारिका शर्मा ने विद्यार्थी परिषद् को इस पहल पर धन्यवाद देते हुए कहा कि युवाओं को इस बुराई को खत्म करने का संकल्प लेकर यहां से जाना चाहिए। मंच पर महापौर अशोक परनामी, समाज कल्याण बोर्ड की अध्यक्षा सरोज कुमारी, मदरसा बोर्ड के अध्यक्ष सलावत खां, परिषद् की महानगर छात्रा अध्यक्षा डॉ.सुमन गुप्ता और महानगर मंत्री राजेन्द्र सिंह शेखावत उपस्थित थे।

भारद्वाज ने बताया कि कार्यक्रम के मुख्य अतिथि डॉ.महेश शर्मा ने कन्या भ्रूण हत्या के विरोध को लेकर एक मशाल प्रज्जवलित की और उस मशाल को परिषद् के प्रदेशाध्यक्ष डॉ. राजीव सक्सेना, समारोह की आयोजन समिति के संरक्षक अशोक परनामी, आयोजन समिति की अध्यक्ष ममता भार्गव को सौंप कर आग्रह किया कि इस बुराई के विरोध में समाज में जनजागरण करें।

भारद्वाज ने बताया कि डॉ.महेश शर्मा ने रैली को झण्डी दिखाकर रवाना किया। जलती मशाल के पीछे चल रहा हज़ारों छात्राओं का रैला, कन्या भ्रूण हत्या बंद करो, बहना बिना क्या करेगा भाई, देश का गौरव–मैं बनूंगी मैं बनूंगी, बहना बिना भाई अधूरा–कन्या बिना संसार अधूरा और विद्यार्थी परिषद् ज़िंदाबाद के नारे लगाते हुए जोश के साथ चल रही थी। छात्राओं ने कन्या भ्रूण हत्या के विरोध में नारे लिखी तख्तियां और विद्यार्थी परिषद् के झंडे हाथों में ले रखे थे। स्कूल कॉलेजों की प्रतिनिधि छात्राएं अपनी संस्था के बैनर के पीछे चल रही थीं। चार लाइनों में चल रही रैली का एक सिरा विश्वविद्यालय के सामने था तो दूसरा सिरा कार्यक्रम स्थल पर था। इस विशाल रैली को देखने के लिए सैंकड़ों लोग सड़क के दोनों तरफ खड़े थे। 12:30 पर रैली गांधी सर्कल पर जाकर सभा में बदल गई। जहां उपस्थित परिषद् के प्रदेशाध्यक्ष डॉ.राजीव सक्सेना ने कन्या भ्रूण हत्या के विरोध में उठ खड़े होने की शपथ उपस्थित लगभग 7000 छात्र–छात्राओं को दिलाई।

महाराष्ट्र

उमड़ पड़ा छात्रों का गुस्सा

संभाजी नगर, (औरंगाबाद) महाराष्ट्र। यहां के गवर्नमेंट पॉलिटेक्नीक महाविद्यालय के लगभग 175 छात्रों ने मिलकर अभाविप के नेतृत्व में आंदोलन किया।

मिली जानकारी के अनुसार यहां के सरकारी पॉलिटेक्नीक महाविद्यालय के छात्रावास में गंदगी के चलते सभी छात्र परेशान थे। बिजली की व्यवस्था, पीने के पानी की किल्लत, खराब गीज़र के चलते गर्म पानी की व्यवस्था न होना, पढ़ने के लिए अखबार नहीं, शौचालय व स्नानागार में गंदगी के चलते छात्रों का जीना दूभर हो गया था।

अभाविप के कार्यकर्ताओं ने इन सभी हालातों की तस्वीरें खींचीं। उसके बाद ज्वाइंट डायरेक्टर ऑफ टेक्नीकल एजूकेशन के दफ्तर के सामने जुलूस निकालकर आंदोलन किया। इसमें लगभग 175 छात्र शामिल हुए। आंदोलन का परिणाम बहुत जल्द ही दिखाई दिया। उसी दिन छात्रावास की सफाई कर दी गई। छात्रावास के सभी छात्रों ने अभाविप को धन्यवाद दिया और अब यहां के बदलावों का आनन्द वे ले रहे हैं।

उत्तंराचल

भ्रष्टाचार के विरुद्ध परिषद् ने किया सफलता पूर्वक संघर्ष

आरोप: तनिष्क के प्रधानाचार्य बीपी वर्मा ने मांगी थी घूस

दून के चार बीएड कॉलेजों तनिष्क बीएड कॉलेज, डॉ. सुशीला तिवारी कॉलेज, द्रोणा कॉलेज के प्रधानाचार्यों द्वारा बीएड की फीस एक लाख रुपए वसूले जाने के विरोध में अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद् ने तनिष्क बीएड कॉलेज में जोरदार प्रदर्शन किया तथा प्रधानाचार्य बीपी वर्मा को कोतवाली पुलिस के हवाले कर दिया।

बीएड के निजीकरण की घोषणा होते ही इसका पुरजोर विरोध छात्र संघ व छात्र संगठनों द्वारा किया गया। इसके लिए छात्रों को पुलिस की लाठियां भी खानी पड़ी और जेल भी जाना पड़ा। लेकिन बीएड कॉलेज के प्रबन्धक कोर्ट चले गए और हाईकोर्ट ने बीएड कॉलेजों में प्रवेश की अनुमति दे दी। इसके बाद गढ़वाल विश्वविद्यालय द्वारा राज्यकोर्ट की सीटों के प्रवेश के लिए काउंसलिंग की गई और इसके लिए फीस भी विश्वविद्यालय में जमा कराई गई। इन सीटों की संख्या करीब 1400 थी। इसके बाद नंबर आया प्रबन्ध कोटे की सीटों का। इसके लिए उन छात्रों से आवेदन जमा करने के लिए कहा गया। इसके बाद शुरू हुई लड़ाई कि प्रवेश विश्वविद्यालय करे या निजी बीएड कॉलेज। इस कश्मकश में निजी बीएड कॉलेजों के प्रबन्ध कोटे की सीटों पर प्रवेश नहीं कर पाए। इसके बाद विवि को झुकना पड़ा लेकिन छात्रों को जिसका डर था वही समस्या सामने आई और निजी बीएड मालिकों द्वारा छोटी–मोटी

राज्यपाल द्वारा प्रवेश प्रक्रिया में पारदर्शिता लाने के निर्देश

परिषद् के आन्दोलन के फलस्वरूप उत्तरांचल के राज्यपाल सुदर्शन अग्रवाल ने उच्च शिक्षा स्तर पर सम्बद्धता प्राप्त तकनीकी शिक्षण संस्थानों के प्रबंध कोटे की सीटों में होने वाली अनियमितताओं को तत्काल रोकने के लिए कठोर कार्यवाही के निर्देश देते हुए कहा है कि प्रवेश प्रक्रिया में अनिवार्य रूप से निष्पक्षता एवं पारदर्शिता के साथ कार्य किया जाए। उन्होंने कहा कि किसी तकनीकी शिक्षण संस्थान में यदि निर्धारित शुल्क से अधिक धनराशि वसूल की गई तो उस संस्थान की तकनीकी विश्वविद्यालय से सम्बद्धता तत्काल समाप्त कर दी जाएगी।

राज्यपाल आज यहां राजभवन में उच्च शिक्षा से सम्बन्धित प्रवेश प्रक्रिया को और बेहतर बनाने के उद्देश्य से आयोजित उच्च स्तरीय बैठक को संबोधित कर रहे थे, जिसमें दून तकनीकी विवि के कुलपति प्रो.वी के तिवारी, तकनीकी शिक्षा सचिव एस. राजू और राज्यपाल के अपर सचिव दीपम् सेठ ने भाग लिया।

राज्यपाल ने इस सम्बन्ध में ये निर्देश भी दिए कि प्रबंध कोटे से भरी जाने वाली सीटों में काउंसलिंग के समय उच्च शिक्षा विभाग तथा तकनीकी विवि का एक-एक प्रतिनिधि अनिवार्य रूप से उपस्थित रहेगा। उन्होंने कहा कि तकनीकी शिक्षण संस्थान का यह गुरूत्तर दायित्व है कि वे प्रवेश प्रक्रिया की दक्षता सूची के अनुसार प्रवेश को सर्वोच्च प्राथमिकता देते हुए ए.आईईईई रैंक की सूचियां अपनी वेबसाइट पर देंगे और नोटिस बोर्ड पर भी लगाएंगे।

राज्यपाल के निर्देश पर प्रवेश प्रक्रिया में संभावित अनियमितताओं को पूर्ण रूप से समाप्त करने के उद्देश्य से राजभवन में अभी यह व्यवस्था सुनिश्चित कर दी गई है कि यदि किसी भी अभिभावक, छात्र अथवा छात्रा को प्रवेश में किसी प्रकार की कोई कठिनाई होती है अथवा वह अनियमितता के कारण प्रवेश से वंचित रहता है तो वह तत्काल राजभवन की दूरभाष संख्या 2755043 पर सीधे संपर्क करके अपनी शिकायत दर्ज करा सकता है। राज्यपाल ने तकनीकी विवि के कुलपति को ये निर्देश भी दिए कि वे पाठ्यक्रम तैयार होते ही उनकी सीडी सभी तकनीकी शिक्षण संस्थानों को अविलम्ब उपलब्ध कराने की व्यवस्था सुनिश्चित करें।

फीस लेकर प्रवेश दिए जाने लगे। इसका विरोध हुआ और जिसका नतीजा सामने आया और चार कॉलेजों के प्रधानाचाय

80 हज़ार से एक लाख तक की निजी बीएड की फीस वसूलते पकड़े गए। जबकि यही फीस विवि द्वारा मात्र 25 हज़ार पांच सौ रुपए निर्धारित की गई है। इसके विरोध में परिषद् के कार्यकर्ताओं ने राजपुर रोड़ स्थित तनिष्क कॉलेज में सरकार विरोधी नारेवाजी की।

दिल्ली

डूसू कार्यालय में राजीव गाँधी की प्रतिमा लगाने के विरोध में आमरण अनशन

अन्दोलन के दबाव में प्रतिमा हटाई गई।

दिल्ली विश्वविद्यालय छात्र संघ कार्यालय में एन.एस.यू.आई द्वारा राजीव गाँधी की प्रतिमा लगाने के विरोध में विद्यार्थी परिषद् ने सफल आंदोलन चलाया। आंदोलन कें प्रांरभ में परिषद् ने कुलपति को ज्ञापन सौंपा तथा मूर्ति हटाने की माँग की गई। परिषद् के प्रदेश मंत्री नकुल भारद्वाज प्रशासन के ढुलमुल रवैये के कारण मूर्ति हटाने तक आमरण अनशन पर बैठ गये। विद्यार्थी परिषद् द्वारा चलाये गये आंदोलन को छात्रों के मिल रहे समर्थन से घबरा कर प्रशासन ने परिषद् की मुर्ति हटाने की माँग को मान लिया तथा विश्वविद्यालय के प्रोक्टर गुरमीत सिंह ने जूस पिलाकर नकुल भारद्वाज का आमरण अनशन समाप्त करवाया। इस अवसर पर विश्वविद्यालय कैंपस में विजय जलूस निकाला गया। परिषद् के प्रदेश मंत्री ने छात्रों को संबोधित करते हुये कहा कि विश्वविद्यालय का राजनीतिकरण व कांग्रेसीकरण करने को सजिश को परिषद् ने विफल कर दिया है। उन्होनें प्रशासन को चेतावनी देते हुये कहा कि अगर दोबारा इस प्रकार का कोई प्रयास हुआ तो परिषद् उसका भी उचित जवाब देगी।

मध्यप्रदेश

दस हजार छात्रों की रैली

जबलपुर : अखिल विद्यार्थी परिषद् ने अपने सभांग स्तरीय प्रर्दशन में दस हजार छात्रों की विशाल रैली निकाली। ये रैली डी.एम.जैन से प्रारम्भ होकर मालवीय चौक, फव्वारा, घटांघर, हाईकोर्ट चौक, इलाहाबाद बैंक चौक से होती हुई आयुक्त कार्यालय तक पहुँची जहाँ पर कार्यक्रम के मुख्य अतिथि सहित सभांग के छात्र नेताओं ने आम सभा को सम्बोधित किया।

कार्यक्रम के मुख्य वक्ता छत्तीसगढ़ के प्रदेश संगठन मंत्री प्रफुल्लकांत रहे। उन्होंने शिक्षा के समक्ष उत्पत्र हो रही चुनौतियों के बारे में छात्रों को जानकारी देते हुये उन्हें आहवान किया वह संगठित होकर इन चुनौतियों का सामना करें। इस अवसर पर रैली को संबोधित करते हुये परिषद् की प्रदेश मंत्री अश्विनी पराजपे ने छात्रो के समक्ष प्रदेश की विभिन्न शैक्षिक समस्याओं को रखा तथा इन समस्याओं को हल करने के लिए विद्यार्थी परिषद् द्वारा सरकार के समक्ष रखी गई माँगों से भी अवगत कराया। इस अवसर पर मध्यप्रदेश के अन्दोलन सयोजक अभिलाष पांडे तथा विश्वविद्यालय संयोजक शरद श्रीवास्तव ने भी आये हुये छात्रों को सम्बोधित किया। इस रैली में सभांग से दस हजार छात्र छात्रों ने हिस्सा लिया। इस अवसर पर प्रशासन को विभिन्न माँगो का माँग पत्र भी सौंपा गया।

महाराष्ट्र

टी.एस.वी.पी. ने शान से मनाया इंजीनियर्स डे

15 सितम्बर का दिन सर विश्वेश्वरैया का जन्मदिवस इंजीनियर्स डे के रूप में मनाया जाता है। तंत्र शिक्षा विद्यार्थी परिषद् (टीएसवीपी) संभाजी नगर शाखा द्वारा इस मौके पर कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला में दो सत्र चले–1) इंडस्ट्री एंड इंजीनियर्स 2) माई रोल टुवार्ड्स भारत 2020।इस कार्यशाला में इन दोनों विषयों पर मार्गदर्शन किया गया। संभाजी नगर के जाने माने उद्योगपति श्री आर.एन.बागला (चेयरमेन, बागला ग्रुप ऑफ इंडस्ट्रीज़) ने प्रथम भाषण किया। स्वयं के उदाहरण देते हुए उन्होंने बताया कि खुद का व्यापार खड़ा कर बड़ा करने के लिए कितनी मेहनत करनी पड़ती है। और केवल किताबी ज्ञान ही काफी नहीं है। ज़्यादा से ज़्यादा अनुभव प्राप्त करने की आवश्यकता है। ईमानदारी, मेहनत और सच्चाई से ही समाज में स्थान प्राप्त हो सकता है।

दूसरे भाषण में भारत 2020 में आज के इंजीनियर्स की क्या आवश्यकता है, और क्या कर्तव्य हैं, संबधित विषय पर मार्गदर्शन प्रो.सुहास रॉटमेरे सर ने किया। शहर के सभी (6) अभियांत्रिकी महाविद्यालयों के छात्र इस कार्यशाला में शामिल हुए। 102 छात्र, 3 छात्राएं, 2 अध्यापक; ऐसे कुल 107 उपस्थिति कार्यक्रम में हुई।

प. उत्तरप्रदेश

वंदेमातरम् के नारों से गूंजा अलीगढ़
'छात्र शक्ति यात्रा' में उमड़े हजारों छात्र

अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद् ने वंदेमातरम् के शताब्दी वर्ष पर एक विशाल छात्रशक्ति यात्रा निकाल कर जिलाधिकारी को उनके कार्यालय पर राष्ट्रपति के नाम ज्ञापन सौंपा। जिसमें राष्ट्रीय ध्वज तिरंगा, राष्ट्रीय गान जन–गण–मन तथा राष्ट्रीय गीत वंदेमातरम् को संविधान के अनुसार समस्त विद्यालयों में अनिवार्य करने की मांग की।

इससे पूर्व शहर के विभिन्न विद्यालयों रघुवीर सहाय, हिन्दू इंटर कॉलेज, पालीवाल, बाबूलाल जैन, धर्मसमाज, हीरा लाल बारहसैनी, एस.एम.वी., सरस्वती विद्या मंदिर, श्री वार्ष्णेय महाविद्यालय, टीकाराम महाविद्यालय के छात्र सुबह से ही रामलीला मैदान अचल ताल पर एकत्र होने लगे।

छात्रशक्ति यात्रा के प्रारम्भ होने पर छात्रों ने वंदेमातरम् गीत का गायन किया। इस अवसर पर प्रदेश उपाध्यक्ष मानवेन्द्र प्रताप सिंह ने छात्रों को संबोधित किया। विभाग संगठन मंत्री सुनील कुमार ने वंदेमातरम् का विरोध करने वालों को अलगाववादी बताया तथा कहा कि ये लोग ही सन् 1947 में भारत विभाजन के जिम्मेदार हैं। राष्ट्रीय कार्यकारिणी सदस्या शालिनी शर्मा ने फतवा पद्धति को राष्ट्रद्रोह की संज्ञा दी। उन्होंने कहा कि भारत में भारतीय कानून का शासन है, शरीयत का नहीं। जो लोग शरीयत के अनुसार रहना चाहते हैं वे देश छोड़कर चले जाएं।

छात्रशक्ति यात्रा में छात्र वंदेमातरम् ज़िन्दाबाद, भारत माता की जय, यदि भारत में रहना होगा वंदेमातरम् कहना होगा, छात्रशक्ति राष्ट्रशक्ति, जो वंदेमातरम् का गायक नहीं वह देश में रहने लायक नहीं, आदि नारे लगाते हुए बढ़ते गए।

पड़ाव दुवे पर वंदेमातरम् गायन के बाद विभाग संयोजक पुष्पेन्द्र सिंह जादौन ने कहा कि आज लोग पवित्र वंदेमातरम् को न गाने का फतवा जारी कर रहे हैं, जो निंदनीय है। सेंटर प्वाइंट चौराहे पर महानगर मंत्री मुनीश कुमार ने वंदेमातरम् को न गाने वालों को चेतावनी दी कि यदि भारत में रहना है तो वंदेमातरम् कहना होगा।

शास्त्री पार्क चौराहे पर महानगर प्रचार प्रमुख हरिओम् गौड़ ने कहा कि वंदेमातरम् भारत माता की वंदना है और जो लोग भारत माता को, जिसकी गोद में खेलकर बड़े हुए, उसे अपनी मां नहीं मानते उन्हें अपनी जन्म देने वाली मां को भी मां कहने का कोई अधिकार नहीं है।

डी.एम. आवास के सामने सुभाष चौराहे पर वंदेमातरम् गायन के बाद महानगर उपाध्यक्ष तपेन्द्र सारस्वत ने कहा कि वंदेमातरम् न गाने वाले राष्ट्रद्रोह का कृत्य कर रहे हैं। महामंत्री गौरव वार्ष्णेय व अतुल राजा ने कहा कि जो लोग वंदेमातरम् को स्वैच्छिक बताते हैं वे लोग तुष्टिकरण की राजनीति को बढ़ावा दे रहे हैं। इस अवसर पर जिलाधिकारी को ज्ञापन सौंपा गया।

उत्तरांचल

श्री गुरूजी जन्म शताब्दी वर्ष पर आयोजित प्रतिभा खोज प्रतियोगिता

अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद् उत्तरांचल प्रदेश द्वारा श्री गुरूजी जन्म शताब्दी वर्ष पर प्रतिभा खोज प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। यह प्रतियोगिता पांच महापुरुषों के जीवन पर आधारित थी। इनमें स्वामी विवेकानंद जी, महर्षि दयानंद जी, श्री अरविंदो जी, डॉ. भीमराव अंबेडकर एवम् श्री गुरूजी के संक्षिप्त जीवन परिचय पर आधारित एक पुस्तक प्रकाशित की गई थी। जिसे पंचामृत नाम दिया गया। इस प्रतियोगिता में 472 विद्यालयों के 32959 छात्रों ने हिस्सा लिया। प्रतियोगिता को चार वर्गों में विभाजित किया गया।

इस प्रतियोगिता को दो भागों में विभाजित किया गया।

प्रथम चरण में 20 अगस्त को हिन्दी माध्यम से पूरे प्रान्त में 175 परीक्षा केन्द्रों पर यह परीक्षा प्रातः 10 बजे से 11 बजे तक सम्पन्न कराई गई जिसमें 33000 छात्र–छात्राओं ने भाग लिया।

द्वितीय चरण में अंग्रेजी माध्यम से इस प्रतियोगिता का आयोजन अक्टूबर माह के द्वितीय सप्ताह के अन्त में किया जाएगा। यह प्रतियोगिता अंग्रेजी माध्यम के विद्यालयों में सम्पन्न कराई जाएगी। इसमें 15000 छात्र–छात्राओं के प्रतिभाग का लक्ष्य रखा गया है।

अंग्रेजी माध्यम के आयोजन के तुरंत बाद नवम्बर माह के प्रथम सप्ताह में परीक्षा का परिणाम घोषित किया जाएगा।

हरियाणा

चन्द्रशेखर आजाद जन्मशताब्दी पखवाड़े का आयोजन

अभाविप रोहतक इकाई पर क्रांतिकारी चंद्रशेखर आजाद जन्म शताब्दी के निमित्त जन्मशताब्दी पखवाड़े का आयोजन किया गया। इसमें 23 जुलाई से 9 अगस्त तक नगर के विभिन्न विद्यालयों में 11वीं व 12वीं कक्षा के विद्यार्थियों द्वारा भाषण, काव्यपाठ, पोस्टर मेकिंग व निबन्ध लेखन प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया जिसमें 211 विद्यार्थियों ने प्रतिभागिता दर्ज की व कुल 4221 विद्यार्थियों की संख्या उपस्थित रही। साथ ही तीन महाविद्यालयों में (दो कन्या महाविद्यालयों) में चन्द्रशेखर आजाद के विषय पर प्रान्त संगठन मंत्री श्रीनिवास व नगर संगठन मंत्री यशवीर श्री राघव का उद्‌बोधन हुआ। 23 जुलाई को प्रान्त कार्यालय पर श्रद्धांजलि सभा आयोजित कर पखवाड़े का शुभारंभ किया गया। 27 जुलाई को उपायुक्त महोदय को नगर में आजाद की प्रतिमा लगाने के लिए 15 कार्यकर्ताओं ने ज्ञापन सौंपा व 2000 पत्रक महाविद्यालयों में बांटे गये। पखवाड़े का समापन जिला स्तरीय भाषण, काव्यपाठ, पोस्टर मेकिंग व निबन्ध लेखन प्रतियोगिता आयोजित कर किया जिसमें 110 प्रतिभागियों ने भाग लिया व 375 की संख्या में छात्र–छात्राएं, शिक्षक व अभिभावकगण उपस्थित थे। मुख्यवक्ता प्रान्तमंत्री श्री सुरेन्द्र सिंह जी थे।

पंजाब

शहीद भगत सिंह की जन्मशताब्दी के शुभारंभ पर निकली भव्य रैली

बटाला : अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद् पंजाब द्वारा महान क्रांतिकारी शहीद भगत सिंह की जन्मशताब्दी के शुभारंभ पर एक भव्य रैली का आयोजन बटाला में किया गया। इस रैली को संबोधित करते हुये होशियारपुर लोकसभा सांसद अविनाश राय खन्ना ने कहा कि पंजाब की धरती ने हमेशा से देश पर जान देने वाले वीरों को जन्म दिया है। उन्होनें कहा कि अपने क्रांतिकारी विचारों व साहसिक कारनामों से पूरे ब्रिटिश साम्राज्य की नींव हिला देने वाले इस नौजवान पर देश को गर्व है। उन्होनें विद्यार्थी परिषद् की सराहना करते हुये कहा कि आज युवायों को भगत सिंह के रास्ते पर चलाने का दायित्व परिषद् बखूबी निभा रही है। इस अवसर पर छात्रों को संबोधित करते हुये प्रदेश मंत्री श्री कमलजीत सिंह ने कहा कि जिस प्रकार भगत सिंह ने अन्याय व अत्याचार के विरूद्ध संघर्ष करने के लिये 'इकलाब जिन्दाबाद' का नारा बुलंद किया था, आज उसी प्रकार देश में बढ रही बेरोजगारी, भ्रष्टाचार व शिक्षा के व्यापारीकरण के विरूद्ध संघर्ष की आवश्यकता है। उन्होंने युवाओं को आह्वान करते हुये कहा कि वह भगत सिंह की जन्मशताब्दी के अवसर पर संकल्प करें कि वह अपना पूरा जीवन भारत की समृद्धि व उन्नति के लिये लगायेंगे तथा भगत सिंह के सपनों को पूरा करेंगे। इस अवसर पर प्रदेश अध्यक्ष पंकज महाजन, रा.क.प. सदस्य सुशील शर्मा विशेष रूप से उपस्थित थे। इस रैली में 500 छात्रों ने हिस्सा लिया।

छात्रों को क्या पढ़ाया जा रहा है? जरा सोचिये!

इग्नू की पुस्तकों में शिव पार्वती और दुर्गा पर टिप्पणियां

–संजीव कुमार सिन्हा

घातक अल्पसंख्यकवाद और गर्हित सेक्युलरवाद का परिणाम यह हो रहा है, कि विश्वविद्यालयों, कॉलेजों और स्कूलों की किताबों में हिन्दू धर्म और संस्कृति का अपमानजनक रूप से मजाक बनाया जा रहा है। देश में एक इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय (इग्नू) है। इसके उपकुलपति प्रो. सुरेश चंद्र गर्ग पक्के मार्क्सवादी बताए जाते हैं। इनके जोड़ीदार और विधि में कार्यक्रम समन्वयक अहमद रजा खान हैं, जो हिन्दुत्व विरोधी विचारों के लिए कुख्यात हैं। सामाजिक विज्ञान विषय में स्नातकोत्तर (प्रथम वर्ष) पाठ्यक्रम के लिए 'धर्म' विषय पर एक पुस्तक इग्नू में लिखवाई गई। एक शोध–छात्रा नयन दलाल ने अंग्रेजी में यह पुस्तक लिखी, जिसका हिन्दी अनुवाद एक सामान्य गृहिणी सीमा से करवाया गया। अर्थात् पुस्तक की लेखिका और अनुवादक दोनों ही किसी भी तरह से एम.ए. की पुस्तक लिखने व अनुवाद करने के पात्र नहीं थे।

किस तरह उक्त पुस्तक में भारत के श्रद्धा बिन्दुओं का अपमान किया गया है, उसके उदाहरण ये हैं–

- शिव–पार्वती नग्न रहते थे... शिव तपस्वियों व देवताओं की पत्नियों के शील भंग करता था। उसका चरित्र विरोधाभासों से भरा था।
- दुर्गा के पुरुष शत्रु उस पर आसक्त रहते थे।
- दुर्गा निद्रा और माया की देवी हैं... उनको शराब पसंद है।

इस विश्वविद्यालय में पत्राचार के माध्यम से यह शिक्षा दी जाती है और यह पुस्तक अब तक 20 हज़ार छात्र–छात्राओं को भेजी जा चुकी है।

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद् (एनसीईआरटी) छद्म सेकुलरवादियों का दूसरा अखाड़ा है। यह परिषद् केन्द्रीय विद्यालयों के लिए पाठ्यपुस्तकें तैयार करती है। इन स्कूलों के छात्रों को देश के गौरवशाली इतिहास व परम्पराओं से काटने का काम ये पुस्तकें भली प्रकार कर रही हैं। भारतीय इतिहास के नायकों, देश के श्रद्धा–केन्द्रों और महापुरुषों की इनमें खूब खिल्ली उड़ाई गई है। दो–चार उदाहरण इस प्रकार हैं–

- राम और कृष्ण का कोई अस्तित्व ही नहीं था। वे केवल काल्पनिक कहानियां हैं।
  (मध्यकालीन भारत, पृष्ठ 245, ले. रोमिला थापर)
- महावीर के अतिरिक्त सभी तीर्थंकर काल्पनिक हैं, इनकी कथा जैन सम्प्रदाय की प्राचीनता सिद्ध करने के लिए गढ़ ली गई।
  (कक्षा–11, प्राचीन भारत, पृष्ठ 101, ले. रामशरण शर्मा)
- पृथ्वीराज चौहान मैदान छोड़ कर भाग गया और जयचन्द गौरी से युद्ध भूमि में लड़ता हुआ मारा गया।
  (कक्षा–11, मध्यकालीन इतिहास, ले. प्रो. सतीश चंद्र)
- रणजीत सिंह अपने सिंहासन से उतर कर मुसलमान फकीरों के पैरों की धूल अपनी लम्बी सफेद दाढ़ी से झाड़ता था।
  (कक्षा–12, पृष्ठ 20, ले. विपिन चन्द्र)
- औरंगजेब ज़िन्दा पीर थे।
  (मध्यकालीन भारत, पृ. 316, प्रो. सतीश चंद्र)
- तिलक, अरविन्द घोष, विपिन चन्द्रपाल और लाला लाजपतराय जैसे नेता उग्रवादी तथा आतंकवादी थे।
  (कक्षा–12, आधुनिक भारत, पृष्ठ 208, ले. विपिन चन्द्र)

ऐसी भद्दी और गर्हित टिप्पणियों की इन पाठ्यपुस्तकों में भरमार है। देश की युवा पीढ़ी देश के इतिहास का ऐसा चित्रण पढ़ेगी तो उसमें राष्ट्र के प्रति गौरव का भाव कैसे आएगा और किस प्रकार वह देश के लिए कुछ करने को प्रेरित होगी? दूसरा प्रश्न अधिक महत्वपूर्ण है और वह यह कि भारत में खुले आम चल रहे ऐसे राष्ट्रविरोधी षड्यंत्रों को कब तक चलने दिया जाएगा और कब तक इस देश का राष्ट्रीय समाज यों अपमानित होता रहेगा?

मेमोरी मंत्र

—(मेमोरी मास्टर विश्वरूप चौधरी से बातचीत पर आधारित)

प्रस्तुति : यतेंद्र शर्मा

संसार में दो 'एम' काफी शक्तिशाली माने जाते हैं, 'मनी' और 'मेमोरी'। लेकिन अब तक पुरानी भ्रांति यही चली आई है कि मनी तो कितना भी कमाया जा सकता हैं, लेकिन मेमोरी भगवान की देन है। अब इस तरह के मिथक टुटने लगे हैं, न जाने कितने छोटे–छोटे बच्चों ने गीता, रामायण, डिक्शनरी और डायरेक्टरी जैसी बड़ी किताबों को याद करके दिखा दिया है कि कुछ नियमो का पालन करके अथवा कुछ ट्रिक्स का इस्तेमाल करके मेमोरी पावर भी बढ़ाई जा सकती है। ऐसे में जबकि आजकल बहुत कुछ याद करना पडता है, तो प्रयोग के लिए इससे बेहतर कोई समय शायद ही हो। इसके लिए आपको रखना होगा कुछ बातों का ध्यान

एसोसिएशन

मेमोरी विशेषज्ञों ने अपने प्रयोगों में पाया है कि एसोसिएशन फैक्टर मेमोरी पावॅर इंप्रूव करने में काफी मदद करता है। इसके लिए विभिन्न बातों, वस्तुओं या सिद्वांतों को आपस में लिंक्ड करना होता है। सेब का ही उदाहरण ले लीजिए, सेब का नाम लेते ही आपके जेहन में उसका कलर, स्मेल, शेप सब आ जाता है। इसी तरह आपके अनुभव, मित्रों से जुड़ी बातें अथवा पढ़ाई से जुड़ी बातें भी याद की जाती है।

इमेज

माना गया है कि हमारी विजुअल मेमोरी सबसे ज्यादा होती है। आप खुद ही सोचिए कि आपको लोगों के चेहरे उनके नाम से ज्यादा देर तक याद रहते है।। इसके लिए अगर किसी बात से इमेज जोड़ ली जाए तो उस बात के याद रहने की संभावना बढ़ जाती है, इसलिये याद करने में ग्राफ, चार्ट और चित्रों का प्रयोग तो बढ़ा ही दें, किसी भी सिद्वांत या आन्सर से किसी चित्र को रिलेट कर भी याद करें।

लोकेशन

दिमाग हर बात को खानों में बांट कर याद करता है। हर बात से रिलेटेड मेमोरी अलग–अलग विशेष खाने में सेव होती है। इसलिए जो भी याद करें, उसको लोकेशन वाइज स्पेसिफाई करके याद करें कि यह किससे रिलेटेड है। इससे आपकी एक और भ्रांति दूर होती है कि केमिस्ट्री पढ़ ली, अब मैथ नहीं पढ़ना। आप किसी भी सब्जेक्ट के बाद कोई भी दूसरा विषय पढ़ सकते है।, दिमाग में सबकी अलग–अलग लोकेशंस हैं।

सिनेस्थीसिया सेंसुऐलिटी

किसी भी बात को याद करने के लिए पढ़ते वक्त अपनी फाइव सेंसेज को सक्रिय रखें। ध्यान रखें जिस किसी भी बात को याद करते वक्त आप अपनी पांचों सेंसेंज का इस्तेमाल करेंगे, उसको दोबारा याद करने में या रिकॉल करने में उनती ही आसानी रहेगी।

मूवमेंट

मूवमेंट इमेजेज को याद रखने के मामले में काफी अहम भूमिका अदा करता है। दरअसल इसकी वजह उसकी थ्री डायमेंशनल प्रकृति होती है। इससे ब्रेन को लिंक करने में आसानी रहती है।

सेक्सुएलिटी

इस बार याद करने में बातों या वस्तुओं को उनकी सेक्सुएलिटी के हिसाब से याद करके देखो। जिन लोगों ने इस फंडे को अब तक अपनाया, अधिकतर को लाभ मिला। सो यू कैन यूज इट।

हयूमर

आपने कभी गौर किया है कि आपको फनी पिक्चर्स, मज़ाकिया घटनाएँ या आर्डे टाइप की बातें कुछ ज्यादा देर तक याद रहती हैं। इसके पीछे आपका सेंस ऑफ हयूमर काम करता है। आप अपने याद करने के प्रोसेज मे 'हयूमर' नाम के इस तत्व का इस्तमाल करके देखें। डेफिनेटली फायदा होगा।

इमेजिनेशन

सिविल सर्विस की तैयारी करने वाले आपको अध्ययन से ज्यादा मनन की सलाह देगें। एक बार किसी चैप्टर को पढ़ने के बाद उसको दिमाम में ही दोहराएं, उसे फिर से इमेजिन करें। उससे मिलता–जुलता कुछ और भी इमेजिन करें। निश्चित ही लाभ होगा।

नंबर

नंबरिंग सिस्टम से क्रम बनता है। इसीलिए ज्यादा बुद्धिमान लोगों के नोट्स क्रम से लगे हुए होते हैं। हर चैप्टर या आन्सर को पाट्र्स में बांटकर नंबरिंग सिस्टम से याद करें। जल्दी तो याद होगा ही, देर तक भी याद रहेगा।

सिंबोलिज्म

किसी भी बात को सिंबल्स के साथ याद करना और भी ज्यादा इंटरेस्टिंग होगा। एक बड़ी बात को एक छोटे से सिंबल से याद रखने की कोशिश करें। सिंबल्स का चयन याद करने वाली वस्तु की प्रकृति के अनुसार ही करेंगे तो और ज्यादा लाभ होगा।

कलर

विशेषज्ञों ने माना है कि आप हमेशा पूरे इंद्रधनुष का इस्तेमाल करें। अपनी मेमोरी को, इमेजिनेशन को ज्यादा पावरफुल बनायें। हो सकता है इसे आप किसी सिद्धांत या परिभाषा को याद करते समय यूज न कर पाएं, लेकिन जो भी बात चाट्र्स या इमेजेस के माध्यम से याद कर रहे हैं, उसमें यह फॉर्मूला बहुत काम आएगा।

ऑर्डर ऐंड सीक्वेंस

हालांकि प्रत्येक बुद्धिमान व्यक्ति किसी भी बात को याद करने से पहले 'आर्डर और सीक्वेंस' का ध्यान रखता है।. लेकिन इसका पालन हर एक को करना चाहिए। करीने से लिखी गई बातों को दिमाग जल्दी ग्रहण करता है और देर तक याद करता है।

पॉजिटिविटी

ब्रेन पॉजिटिव इमेजेस आसानी से रिकॉल कर लेता है। इसलिए याद करते वक्त ज्यादा से ज्यादा पॉजिटिविटी का इस्तेमाल करें।

इग्ज़ैजरेशॅन

यानी अतिशियोकिता हालांकि इस तत्व को आम लाइफ में निगटिव सेंस में ही लिया जाता है, मगर जब आप किसी भी बात को किसी इमेज से जोड़कर याद करते है, तो साउंड, कलर, साइज और शेप में इस तत्व को इस्तेमाल करके याद करें। रिकॉल करने में उतनी ही आसानी होगी।

ईसाइयों के गैर सरकारी संगठनों को भारी मात्रा में मिलता है विदेशी धन

देश में ईसाई मिशनरियों की ओर से संचालित किए जा रहे गैर सरकारी संगठनों को भारी मात्रा में विदेशी धन की प्राप्ति हो रही है। सूत्रों के अनुसार सन् 2003–04 में देश के गैर सरकारी संगठनों को विदेशों से 5100 करोड़ रुपए प्राप्त हुए थे। इसमें से 25 संगठनों में से 18 संगठन ईसाई मिशनरियां संचालित करती हैं।

इस तरह की गतिविधियों पर चिंता व्यक्त करते हुए मंत्रियों का समूह विदेशी अनुदान नियमन कानून (एफसीआरए) 1976 में बदलाव कर धर्म परिवर्तन में लगे गैर सरकारी संगठनों के विदेशी अनुदानों पर रोक लगाने पर विचार कर रहा है। ईसाई मिशनरियों के एनजीओ को मिल रहे अनुदान का यह आंकड़ा गुजरात के मुख्यमंत्री नरेन्द्र मोदी के हाल ही के इस आरोप के बाद और महत्वपूर्ण हो जाता है कि कुछ संगठनों को विदेशों से पैसा मिल रहा है। इस पैसे पर रोक लगा पाने में असफल रहे एफसीआरए 1976 को बदलने के उद्देश्य से गत जून में एक नए कानून को बनाने की प्रक्रिया पर निगरानी रखने के लिए मंत्रियों का समूह बनाया गया था।

यह कानून ऐसे समय में बनाया जा रहा है जब विभिन्न सुरक्षा एजेंसियों ने यह चिंता व्यक्त की है कि एनजीओ के माध्यम से भारी मात्रा में विदेशी धन का हेरफेर हो रहा है और वर्तमान कानून उस पर रोक लगाने में असफल साबित हो रहा है। नए कानून में विदेशों से धन प्राप्त करने वाले एनजीओ के लाइसेंसों की समीक्षा का प्रावधान भी शामिल करने की संभावना है।

The ABVP made rapid strides since indepence of country. Instead of facing the ABVP ideologically in a democratic way, the marxist, Naxal and Islamic goondas had exhibited monumental intolerance and resoted to murder politics. The nation splitters have put medieval barbarism to shame, betraying their Utter contempt for nationalism. Despite the terror, ABVP *Karyakartas* continue to move forward. It is a great saga of sacrifice and martyrdom:—

Ch. Ravinder Reddy

06.02.1984
Janagaon
Warangal dt.

Jangaon, a small town midway on the Hyderabad-Warangal rail route, was one of the nerve centers of the communist armed struggle of 1946-1951. The RSS made deep inroads in this area since late 1960s. The ABVP made rapid strides since 1977.

Unable to tolerate the growth of ABVP in Jangaon, the Naxals first made an attempt to eliminate prominent ABVP workers on 5 August 1983. The RSU goons attacked Dasamanth Reddy, Ravinder Reddy and Venkata Swamy. The three ran to the near by DSP's house and saved themselves.

Chancharapu Ravinder Reddy joined ABVP in his first year at the college and became very active. He became the vice president of Jangaon unit for 1983-84. He belonged to an influential Congress family.

On the night of 6 February 1984, Ravinder returned from Hyderabad by Narsapur Express at about 11.30 p.m. From the railway station he proceeded to his house in a rickshaw and sprinkled acid on Ravinder's face. Even before he could recover from the shock, was stabbed all over. Though the incident occurred close to the railway gate, no one informed the police. All were terror stricken. No one knew whether he died instantaneously or succumbed to injuries due to denial of timely medical aid. The body was lying there on the road till daybreak.

Jangaon observed a total bandh to protest against the ghastly murder.\

वन्देमात्रम शताब्दी पर परिषद् के छात्र–छात्रायें भव्य रैली निकालते हुये

मध्यप्रदेश में आयोजित संभाग स्तरीय रैली में उमड़ा छात्र–छात्रों का भारी जन समूह

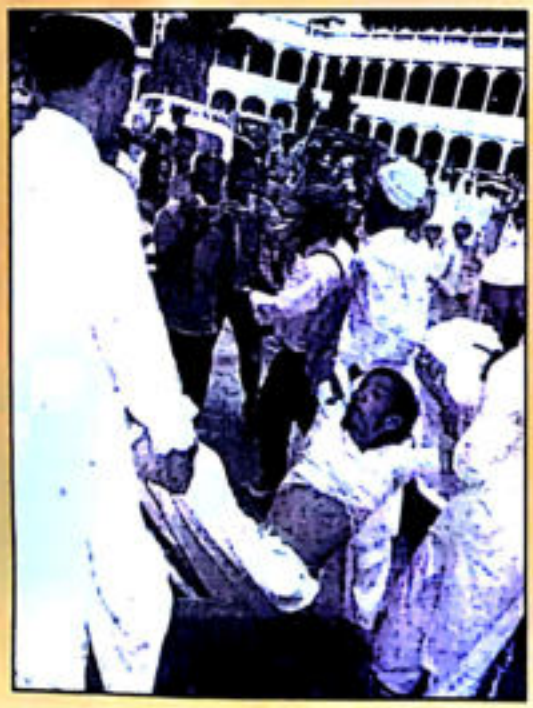

वाराणसी में आन्दोलन कर रहे परिषद् कार्यकर्त्ताओं पर पुलिस का बरबरर्ता पूर्ण अत्याचार

मर कर भी न मिटेगी दिल से वतन की उल्फत
मेरी मिटट्री से भी खुशबु-ए-वतन आयेगी

शहीद-ए-आजम भगत सिंह
जन्मशताब्दी वर्ष
2006-2007